॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
May Almighty Illuminate our intellect and inspire us towards the righteous path.

सकारात्मक परिवर्तन का संवाहक पत्र

संस्कृति संचार

/dsvvofficial
/JMCDSVV /DSVV TV

(RNI - UTTBIL/2014/57984)

देव संस्कृति विश्वविद्यालय | फरवरी 2025 | त्रैमासिक समाचार पत्र | वर्ष 11, अंक 35, पृष्ठ 08

सर्वे भवन्तु सुखिनः के भाव से प्रज्ञेश्वर महादेव का हुआ रुद्राभिषेक

महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आध्यात्मिक उल्लास और समर्पण का संगम

संघमित्रा

26 फरवरी 2025- भारत की पावन भूमि पर अनेक धार्मिक और आध्यात्मिक उत्सव मनाए जाते हैं, जिनमें से महाशिवरात्रि का विशेष स्थान है। यह पर्व हिंदू धर्म में अत्यधिक महत्व रखता है और आध्यात्मिक जागरण तथा भक्ति की अनुपम प्रेरणा प्रदान करता है।

महाशिवरात्रि का पर्व फाल्गुन माह की चतुर्दशी को मनाया जाता है और इसे भगवान शिव की आराधना का विशेष दिन माना जाता है। इस दिन भक्तगण व्रत, रात्रि जागरण और विशेष पूजन-अर्चन के माध्यम से भगवान शिव का आशीर्वाद प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस दिन भगवान शिव और माता पार्वती का पवित्र विवाह संपन्न हुआ था, जो सृष्टि के संतुलन और आध्यात्मिक शक्ति के समन्वय का प्रतीक है। इसके अतिरिक्त, इस दिन शिवलिंग पर जलाभिषेक, दुग्धाभिषेक और बिल्व पत्र अर्पित करने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है।

महाशिवरात्रि का आध्यात्मिक एवं दार्शनिक महत्व

महाशिवरात्रि केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि आत्मिक उन्नति और स्वयं के भीतर छिपी दिव्यता को जागृत करने का अवसर भी है। भगवान शिव को संहारक और सृजनकर्ता दोनों रूपों में पूजा जाता है। वे न केवल भौतिक जगत के परिवर्तन के अधिपति हैं, बल्कि आंतरिक जगत की गहराइयों में भी उनका निवास है। शिव का तांडव नृत्य न केवल संहार का प्रतीक है, बल्कि यह आत्मज्ञान और मोक्ष की ओर अग्रसर होने का संदेश भी देता है।

भगवान शिव की उपासना करने से व्यक्ति के जीवन में शांति, समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। यह पर्व हमें बताता है कि जीवन में आध्यात्मिक जागरण और आत्मा की शुद्धि अत्यंत आवश्यक है। महाशिवरात्रि की रात्रि को जागरण करने और "ॐ नमः शिवाय" का जाप करने से मानसिक शांति प्राप्त होती है और व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से उन्नति की ओर अग्रसर होता है। ध्यान और तपस्या के माध्यम से व्यक्ति अपनी चेतना को शुद्ध कर सकता है और अपने भीतर छिपी अनंत संभावनाओं को जागृत कर सकता है।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में महाशिवरात्रि का भव्य आयोजन

महाशिवरात्रि का यह शुभ पर्व देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार में भी अपार श्रद्धा, समर्पण और उल्लास के साथ मनाया गया। 26 फरवरी को विश्वविद्यालय के प्रांगण में स्थित प्रज्ञेश्वर महाकाल मंदिर में भव्य आयोजन किया गया, जिसमें विश्वविद्यालय के शिक्षकगण, विद्यार्थियों, श्रद्धालुओं और देश-विदेश से आए भक्तों ने भाग लिया। यह आयोजन एक आध्यात्मिक उत्सव का रूप ले चुका था, जिसमें भक्ति, तपस्या और आत्मसमर्पण की अद्भुत झलक देखने को मिली।

देसंविवि के प्रतिकुलपति प्रज्ञेश्वर महाकाल प्रांगण में स्थित शिवलिंग का रुद्राभिषेक पूजन करते एवं उपस्थित शिवभक्त

इस विशेष अवसर पर कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी और शैफाली जीजी के आगमन से हुई। उनकी उपस्थिति ने इस आयोजन में एक नई ऊर्जा का संचार किया। इसके पश्चात मंदिर में विशेष रुद्राभिषेक का आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धालुओं ने भगवान शिव का अभिषेक करते हुए मंत्रोच्चार किया। रुद्राभिषेक के दौरान वैदिक ऋचाओं और प्रज्ञा गीतों का समवेत गान किया गया, जिससे संपूर्ण वातावरण आध्यात्मिक तरंगों से गूंज उठा।

रुद्राभिषेक और विशेष पूजन की दिव्यता

रुद्राभिषेक शिव पूजा का एक अत्यंत प्रभावशाली और महत्वपूर्ण अनुष्ठान है। इसमें भगवान शिव को विभिन्न पवित्र सामग्रीयों से स्नान कराकर उनकी उपासना की जाती है। जल, दूध, दही, घी, शर्करा, शहद और बेलपत्र से भगवान शिव का अभिषेक किया जाता है, जिससे नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। इस अनुष्ठान के दौरान श्रद्धालु "ॐ नमः शिवाय" और महामृत्युंजय मंत्र का जाप कर रहे थे, जिससे वातावरण में एक दिव्य अनुभूति हो रही थी।

इसके बाद भगवान शिव की महिमा का वर्णन करने वाले भजन-कीर्तन का आयोजन हुआ, जिसमें विद्यार्थियों और श्रद्धालुओं ने भाग लिया। शिव भजनों की मधुर ध्वनि और भक्तों की एकाग्रता ने इस आयोजन को और भी भव्य बना दिया।

महाकाल की आरती और प्रसाद वितरण

कार्यक्रम के अंत में प्रज्ञेश्वर महाकाल की भव्य आरती की गई, जिसमें उपस्थित सभी भक्तगणों ने श्रद्धा और भक्ति भाव से भाग लिया। इस दौरान मंदिर में दीपों की जगमगाहट और शंखनाद की दिव्य ध्वनि से पूरा वातावरण शिवमय हो गया। आरती के उपरांत सभी भक्तों को प्रसाद वितरित किया गया, जिससे भक्तों के हृदयों में प्रसन्नता और संतोष का भाव उत्पन्न हुआ। इस आयोजन में देश- विदेश से आए श्रद्धालुओं ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। भक्तों ने इसे एक अद्भुत आध्यात्मिक अनुभव के रूप में अनुभव किया और भगवान शिव की अनुकंपा को अपने जीवन में महसूस किया। विश्वविद्यालय के शिक्षक, विद्यार्थी और कर्मचारीगणों ने इस आयोजन में तन, मन और आत्मा से सहयोग दिया और इस दिव्य पर्व को सफल बनाया।

महाशिवरात्रि का संदेश : आत्मचिंतन और साधना की प्रेरणा

महाशिवरात्रि का पर्व केवल एक धार्मिक उत्सव नहीं, बल्कि यह आत्मचिंतन और आध्यात्मिक जागृति का भी प्रतीक है। यह हमें यह सिखाता है कि जीवन में सच्ची सफलता केवल भौतिक उपलब्धियों से नहीं, बल्कि आंतरिक शुद्धता और आत्म-साक्षात्कार से प्राप्त होती है। भगवान शिव त्याग, तपस्या और ध्यान के प्रतीक हैं और उनका जीवन हमें यह प्रेरणा देता है कि हमें अपनी इच्छाओं, विकारों और अहंकार को त्यागकर सच्चे ज्ञान और आत्मिक उन्नति की ओर बढ़ना चाहिए।

राज्यपाल द्वारा डॉ. चिन्मय पण्ड्या डी. लिट की मानद उपाधि से सम्मानित

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय के 11वें दीक्षांत समारोह के दौरान उत्तराखंड के माननीय राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल श्री गुरमीत सिंह (सेनि) ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को डी. लिट की मानद उपाधि से सम्मानित किया।

अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा प्रतिनिधि डॉ. पंड्या जी को यह सम्मान उनके विभिन्न योगदानों के लिए दिया गया। युवा आइकान डॉ. पण्ड्या विश्वभर में आध्यात्मिक जागरूकता लाने, योग और ध्यान के प्रचार-प्रसार, वैदिक संस्कृति, मूल्यों और परंपराओं के संरक्षण एवं प्रोत्साहन, महिलाओं को सशक्त बनाने के प्रयासों, युवाओं में कौशल का संचार करने, पर्यावरण संरक्षण, स्थायी जीवनशैली को बढ़ावा देने, मूल्य आधारित शिक्षा के प्रसार, और वैश्विक संगठनों में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए अध्यात्म एवं संस्कृति का संदेश फैलाने में विगत कई वर्षों से जुटे हैं।

देसंविवि के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को डी. लिट की मानद उपाधि से सम्मानित करते उत्तराखंड के माननीय राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल श्री गुरमीत सिंह

युवा आइकान डॉ. चिन्मय पण्ड्या के मार्गदर्शन और समर्पण के कारण विश्व के अनेक प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों व विभिन्न प्रतिष्ठानों में अपनी विशेष पहचान बना चुके हैं। उनका शिक्षण व मार्गदर्शन शैली उन संस्थाओं में एक आदर्श बन चुकी है और उन्होंने शिक्षा, समाजसेवा, और व्यक्तिगत विकास के क्षेत्र में अपार योगदान दिया है। वे न केवल शैक्षिक क्षेत्र में अपनी विशेषज्ञता का उपयोग करते हैं, बल्कि व्यक्तिगत और सामाजिक दृष्टिकोण से भी विद्यार्थियों और समग्र समाज को सशक्त बनाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहते हैं। उनके द्वारा दिए गए मार्गदर्शन ने कई छात्रों और पेशेवरों को जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया है।

गौरतलब है कि गुरुसत्ता के दिव्य संरक्षण एवं डॉ. पंड्या जी के नेतृत्व में गायत्री परिवार ने सामाजिक और आध्यात्मिक नवोत्थान के विभिन्न क्षेत्रों में निरंतर कार्य किया है, जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरणादायक है।

मानद उपाधि अखिल विश्व गायत्री परिवार एवं देसंविवि के सभी कार्यकर्ताओं को समर्पित है।

- प्रतिकुलपति, डॉ. चिन्मय पण्ड्या

लंदन के हाउस ऑफ पार्लियामेंट में गूंजा गायत्री महामंत्र, हुई देवस्थापना

लंदन (इंग्लैण्ड) के हाऊस ऑफ पार्लियामेंट में अपने विचार रखते युवा आइकॉन डॉ. चिन्मय पण्ड्या एवं वहां उपस्थित सदस्यों को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए

◉ पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

वर्ष 2026 गायत्री परिवार की संस्थापिका माता भगवती देवी शर्मा की जन्म शताब्दी वर्ष है और सिद्ध अखण्ड दीपक का भी सौ वर्ष पूरा हो रहा है। इस स्वर्णिम अवसर को अखिल विश्व गायत्री परिवार वृहद् स्तर पर मनाने जा रहा है। इस आयोजन हेतु अग्रिम पंक्ति में कार्य कर रहे देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति युवा आइकॉन डॉ. चिन्मय पण्ड्या इन दिनों इंग्लैण्ड प्रवास पर हैं। वे एक विशेष आयोजन हेतु लंदन (इंग्लैण्ड) के हाऊस ऑफ पार्लियामेंट पहुंचे और वहाँ उपस्थित मंत्रियों, सदस्यों एवं अधिकारियों को इस स्वर्णिम अवसर पर गायत्री महामंत्र और अखिल विश्व गायत्री परिवार की गतिविधियों पर विस्तृत जानकारी साझा की। वैदिक परंपरानुसार देवस्थापना के चित्र की स्थापना कर पूजा अर्चना की और विश्व कल्याण के लिए प्रार्थना किया।

यह पहला मौका है किसी यूरोपीय देशों की उच्च सदनों में गायत्री परिवार द्वारा देवस्थापना हुई और सर्वे भवन्तु सुखिनः के भाव से प्रार्थना की गयी। आयोजन के दौरान उपस्थित समस्त मंत्रीगण, संसद सदस्य एवं अधिकारीगण पीतवस्त्र धारण किये और गायत्री परिवार के आयोजन में श्रद्धा भाव से शामिल हुए। उल्लेखनीय है कि यूरोपीय देशों में किसी समाजसेवी संस्था द्वारा यह पहला कार्यक्रम है। युवा आइकॉन डॉ. चिन्मय पण्ड्या के नेतृत्व में अखिल विश्व गायत्री परिवार न केवल भारत में वरन् विश्व के अस्सी से अधिक देशों में विस्तार हो रहा है। हाऊस ऑफ पार्लियामेंट, वेस्टमिंस्टर में आयोजित इस सभा को संबोधित करते हुए युवा आइकॉन डॉ. पण्ड्या ने कहा कि यह एक ऐतिहासिक क्षण है, जहाँ गायत्री महामंत्र का गुंजायमान हुआ और शान्तिपाठ का भी सस्वर उच्चारण हुआ। गायत्री परिवार के लिए भी अलौकिक क्षण है। उन्होंने कहा कि यह एक ऐसा स्थान है, जहाँ विश्व के लिए अनेक उपक्रमों का जन्म हुआ है। यहाँ से युगऋषि पूज्य गुरुदेव व वंदनीया माताजी के सद्विचार पूरे देश में फैलेगा। इस दौरान इंग्लैण्ड के मंत्री, संसद सदस्यों आदि को युगऋषि पूज्य गुरुदेव द्वारा संपादित आर्ष साहित्य आदि भेंटकर सम्मानित किया। इस अवसर पर इंग्लैण्ड के कई मंत्री, सांसद सहित एफआईएल के निदेशक लार्ड रावल, बिशप लूसा, बिशप स्नाइडर, पार्लियामेंट के अनेक अधिकारीगण उपस्थित रहे।

पोलैंड में डॉ. चिन्मय पण्ड्या को मिला सर्वोच्च नागरिक सम्मान

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या पोलैण्ड में रॉक्लॉ शहर का सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित एवं उपस्थित गणमान्य अतिथि

◉ पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

देव संस्कृति विवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को पौलैण्ड में रॉक्लॉ शहर का सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित किया गया। युवा आइकान डॉ. पण्ड्या को मानवता के प्रति उनके अद्वितीय योगदान और समाज कल्याण में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका के लिए यह सम्मान दिया गया। सम्मान में सम्मान पत्र आदि भेंट किया गया। युवा आइकान ने इस सम्मान को विश्व भर के गायत्री परिवार को सौंप दिया। कहा कि हमारे आराध्यदेव युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्यश्री एवं माता भगवती देवी शर्मा की कृपा से यह प्राप्त हुआ है, इसमें अखिल विश्व गायत्री परिवार के करोड़ों परिजनों का समान अधिकार है। इस सम्मान से डॉ. पंड्या की जिम्मेदारियाँ और बढ़ गयी है। वे अपने मिशन के प्रति और अधिक समर्पित होंगे। इस प्रकार के सम्मान न केवल सम्मानित व्यक्ति के लिए बल्कि समाज और मानवता के लिए भी प्रेरणा का स्रोत होते हैं। बता दें युवा आइकान अब सौ से अधिक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मान से सम्मानित हो चुके हैं।

पौलैण्ड के रॉक्लॉ शहर में आयोजित इस सम्मान समारोह में टॉमसजो माजोविकी के मेयर मार्सिन विटको कार्तिकेय जौहरी, रॉक्लॉ में भारतीय गणराज्य के मानद वाणिज्य दूत और फादर क्रिजस्तोफ किल्बोविक्ज, प्रमुख सेंट क्रिस्टोफर फाउंडेशन, रॉक्लॉ में धर्मशास्त्र के पोंटिफिकल संकाय के पूर्व कुलपति फादर आंद्रेज टॉमको आदि गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुखद्वय श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या, श्रद्धेया शैलदीदी व शांतिकुंज व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरी सहित सम्मत गायत्री परिवार ने युवा आइकान डॉ. चिन्मय पण्ड्या को बधाई दी। बता दें कि युवा आइकान डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी अपने यूरोप प्रवास के अंतर्गत इन दिनों पोलैण्ड हैं। वे बाल्टिक देशों का भी दौरा करेंगे और बाल्टिक देशों के शैक्षणिक संस्थानों में भारतीय संस्कृति पर विशेष व्याख्यान भी देंगे।

देसंविवि और केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के बीच महत्वपूर्ण समझौता

◉ पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

हरिद्वार स्थित देव संस्कृति विश्वविद्यालय और केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के बीच गुरुवार को एक महत्वपूर्ण समझौता पर हस्ताक्षर किए गए। समझौते पर देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पंड्या और केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने हस्ताक्षर किया।

प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पंड्या और प्रो. सत प्रकाश बंसल ने इस समझौते को संस्थाओं के लिए एक ऐतिहासिक कदम बताया और कहा कि यह सहयोग भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली में नवाचार और उत्कृष्टता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इसके साथ ही यह समझौता दोनों विश्वविद्यालयों के बीच गहरे संबंधों की नींव रखेगा और भविष्य में और भी सहयोगी परियोजनाओं को जन्म देगा।

इस समझौते के तहत दोनों विश्वविद्यालयों के शोधकर्ता और शिक्षक मिलकर विभिन्न क्षेत्रों में ज्ञान और अनुभव का आदान-प्रदान करेंगे। इसके अलावा यह साझेदारी छात्रों के लिए भी नई संभावनाओं और अवसरों का मार्ग प्रशस्त करेगी, जिसमें वे उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान और शिक्षा में भाग ले सकेंगे।

देसंविवि और जीएस आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज के बीच शैक्षणिक समझौता

◉ पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

हरिद्वार स्थित देव संस्कृति विश्वविद्यालय और हापुड़ के जीएस आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल के बीच एक शैक्षणिक समझौता पर हस्ताक्षर हुआ। इस समझौता में देसंविवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या और जीएस आयुर्वेद मेडिकल कॉलेज की प्राचार्या प्रो. डॉ. भावना सिंह ने हस्ताक्षर किया। इसका उद्देश्य शैक्षिक और वैज्ञानिक गतिविधियों को बढ़ावा देना, शैक्षणिक सहयोग को सुदृढ़ करना और स्वास्थ्य, योग और आयुर्वेद के क्षेत्र में नई उपलब्धियों की दिशा में कार्य करना है। साथ ही दोनों संस्थान आयुर्वेद, स्वास्थ्य, योग, मनोविज्ञान और समाज के कल्याण के क्षेत्र में संयुक्त अनुसंधान और शैक्षिक सहयोग के लिए कार्य करेंगे। इस समझौते के तहत प्रमुख क्षेत्रों में संयुक्त शोध परियोजनाओं की स्थापना, संकाय और छात्रों का आदान-प्रदान, सेमिनार और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन और अंतरराष्ट्रीय अनुदान प्राप्त करने के लिए संयुक्त प्रस्तावों का विकास शामिल है। इस के माध्यम से प्राचीन आयुर्वेदिक परंपराओं को आधुनिक विज्ञान के साथ जोड़कर मानव कल्याण के लिए नई राहें खोली जाएंगी।

युवा आइकान डॉ. पण्ड्या ने रशियन दल को किया सम्मानित

रशियन दल देसंविवि के प्रतिकुलपति युवा आइकान डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी से भेंट करते हुए।

◉ पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

मास्को रूस से एक दस सदस्यीय दल शांतिकुंज पहुंचा। इस दल में उच्च प्रशिक्षित व आईटी प्रोफेशनल्स शामिल हैं और सभी युवा हैं। वे महाकुंभ प्रयागराज दर्शन स्नान के बाद गायत्री तीर्थ आये हैं। उन्होंने यहाँ गायत्री के लघु अनुष्ठान सम्पन्न किया और अपने शांतिकुंज प्रवास के दौरान रशियन दल ने देव संस्कृति विवि के प्रतिकुलपति युवा आइकान डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी से भेंट की और गायत्री साधना, उपासना से संबंधित अपनी जिज्ञासाओं का समाधान पाया। इस अवसर पर युवा आइकान ने साधना से सिद्धि सहित विभिन्न विषयों पर रशियन दल का मार्गदर्शन किया। सभी को युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित युग साहित्य आदि भेंट कर सम्मानित किया।

गौरतलब है कि अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं देव संस्कृति विवि के प्रतिकुलपति युवा आइकान डॉ. चिन्मय पण्ड्या के रूस यात्रा के दौरान इन लोगों ने गायत्री साधना के प्रति अपनी जिज्ञासाओं को प्रकट किया था। तब उन्हें शांतिकुंज आने का आमंत्रण दिया गया था। यह यात्रा और साधना का सिलसिला धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण है।

शांतिकुंज विदेश विभाग ने बताया कि इससे पहले भी वर्षों से रशियन, अमेरिका, दक्षिण अफ्रीका सहित विभिन्न देशों के साधक गायत्री साधना करने शांतिकुंज आते रहे हैं। शांतिकुंज का यह वातावरण साधकों को मानसिक शांति, सकारात्मक ऊर्जा और आध्यात्मिक विकास की दिशा में बहुत ही सहायता प्रदान करता है। वे सभी साधना के अनेक चमत्कारिक लाभ से अभिभूत भी हुए हैं।

देसंविवि द्वारा तैयार युगऋषि पूज्य आचार्यश्री की आकृति पर होलोग्राम का विमोचन

देसंविवि के मृत्युंजय सभागार में आयोजित ज्योति कलश यात्रा में दीप प्रज्जवलन एवं अनावरण करते विशिष्ट अतिथिगण।

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

विश्व हिन्दू परिषद के उपाध्यक्ष श्री चंपतराय जी ने कहा कि हमें अपने समाज को अखंड बनाए रखने के लिए सदैव अपनी परंपराओं, जड़ों और संस्कृति से जुड़े रहना चाहिए। हमारी संस्कृति और परंपराएं ही हमारी पहचान हैं और इन्हीं के माध्यम से हम समाज और राष्ट्र के सशक्तिकरण की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं। तभी समाज और राष्ट्र का जागरण संभव है। वे देव संस्कृति विश्वविद्यालय के मृत्युंजय सभागार में आयोजित ज्योति कलश यात्रा कार्यशाला को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। इस कार्यशाला में उ.प्र. के विभिन्न जिलों से एक हजार से अधिक गायत्री परिवार के कर्मठ व सक्रिय कार्यकर्त्तागण शामिल हुए। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महासचिव श्री चंपतराय जी ने कहा कि जो समाज से कट गया, उसका पतन होते हुए चला जाता है। इससे पूर्व देसंविवि के प्रतिकुलपति युवा आइकॉन डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि ईश्वरीय शक्ति के साथ मिलकर कार्य करना सबसे बड़ा सौभाग्य है, क्योंकि हम भगवान की दिव्य प्रेरणा से उनके कार्यों को आगे बढ़ाने में अपना श्रम, समय लगा रहे हैं।

यह समय वास्तव में अकल्पनीय सौभाग्य लेकर आया है, क्योंकि आज हम सब मिलकर युगऋषि पूज्य आचार्यश्री द्वारा प्रज्वलित दिव्य अखण्ड ज्योति के प्रकाश से जन-जन को आलोकित करने जा रहे हैं। ज्योति अब ज्वाला बन सम्पूर्ण राष्ट्र को प्रकाशित करने जा रही हैं। उ.प्र. के परिवहन राज्यमंत्री श्री दयाशंकर सिंह ने कहा कि गायत्री परिवार का नारा हम बदलेंगे, युग बदलेगा अब चरितार्थ होते दिखाई दे रहा है। वहीं सायंकालीन सभा में शांतिकुंज व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरी, विश्वप्रकाश त्रिपाठी आदि ने भी कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। युवा आइकॉन डॉ. पण्ड्या ने विहिप उपाध्यक्ष श्री चंपतराय जी एवं परिवहन मंत्री श्री दयाशंकर सिंह जी, उत्तराखण्ड के स्वामी राजेश्वर जी, गुजरात के पूर्व डीआईजी श्री डी.जी. वंजारा, अपर निदेशक श्री राजेश अहिरवार को गायत्री महामंत्र लिखित उपवस्त्र, स्मृति चिह्न, युग साहित्य आदि भेंटकर सम्मानित किया। इस अवसर पर युवा आइकॉन डॉ. पण्ड्या एवं अतिथियों ने युगऋषि पूज्य आचार्यश्री की आकृति में होलोग्राम आदि का विमोचन किया। इससे पूर्व विहिप उपाध्यक्ष श्री चंपतराय जी एवं परिवहन मंत्री श्री दयाशंकर सिंह एवं अतिथियों ने विवि के विभिन्न प्रकल्पों का भ्रमण किया। अतिथियों ने विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे सकारात्मक कार्यों की प्रशंसा करते हुए इसे समाज के लिए एक आदर्श कार्य बताया।

> अकल्पनीय सौभाग्य का है यह समय
>
> **- प्रतिकुलपति, डॉ. चिन्मय पण्ड्या**

> सद्विचार से राष्ट्र का जागरण संभव
>
> **- श्री चंपत राय जी**

देसंविवि व शांतिकुंज में पूरे उत्साह से हुआ ध्वजारोहण

श्रद्धेया शैलदीदी एवं युवा आइकॉन डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने वैदिक मंत्रोच्चारण व शंखनाद के बीच ध्वज फहराया

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्री तीर्थ शांतिकुंज और गायत्री विद्यापीठ में पूरे उत्साह एवं उमंग के साथ राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय व गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में स्नेहसलिला श्रद्धेया शैलदीदी एवं युवा आइकॉन डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने वैदिक मंत्रोच्चारण व शंखनाद के बीच ध्वज फहराया और पूजन कर सलामी दी।

राष्ट्रीय गान के साथ विभिन्न कार्यक्रम भी हुए, जिसमें देशभक्ति से संबंधित विविध सांस्कृतिक और शैक्षिक कार्यक्रम था। विद्यार्थियों और शांतिकुंज कार्यकर्ताओं ने ने मिलकर रचनात्मक प्रस्तुतियाँ दीं। इस अवसर पर स्नेहसलिला श्रद्धेया शैलदीदी और डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने अपने संदेश में राष्ट्र के प्रति श्रद्धा और समर्पण को बल देते हुए युवाओं को प्रेरित किया। उन्होंने राष्ट्र निर्माण में शिक्षा और संस्कार की अहम भूमिका पर जोर दिया।

देसंविवि के कुलाधिपति व अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या ने अपने संदेश में कहा कि हमारे देश की महानता और समृद्धि में प्रत्येक व्यक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका है। सभी को अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों का एहसास होना चाहिए, जिससे वे राष्ट्र को समृद्ध व सशक्त बनाने में सक्रिय योगदान देंगे। शिक्षा, संस्कार और अनुशासन के माध्यम से हम समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं।

देसंविवि में सामूहिक मृदंग वादन ने मोहा मन

देव संस्कृति विवि के मातृभूमि मण्डपम् में पहली बार आयोजित सामूहिक मृदंग वादन में प्रस्तुति देते कलाकार

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

देव संस्कृति विवि के मातृभूमि मण्डपम् में पहली बार सामूहिक मृदंग वादन ने सभी का मन मोह लिया। प्रसिद्ध मृदंग वादक श्री संतोष नामदेव के नेतृत्व में सात वर्षीय सृजन शर्मा से लेकर २८ मृदंग वादकों द्वारा विशेष ताल के प्रस्तुतिकरण ने प्राचीन वाद्ययंत्र के प्रति आकर्षित किया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित प्राचीन वाद्ययंत्र मृदंग का सामूहिक वादन कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आयोजन रहा। इसका उद्देश्य मृदंग की महत्ता और इसकी संयोजकता को प्रदर्शित करना था। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के छात्रों और संगीत प्रेमियों ने भाग लिया, जिन्होंने एक साथ मिलकर इस शास्त्रीय वाद्ययंत्र के अद्भुत संगीत की प्रस्तुतियां दी।

आयोजन में विभिन्न शैलियों और तालों में मृदंग वादन किया गया, जिससे दर्शकों को भारतीय संगीत की विविधता और गहराई को महसूस करने का अवसर मिला। इस प्रकार के सामूहिक वादन कार्यक्रम न केवल कलाकारों को एक मंच प्रदान करते हैं, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर को भी आगे बढ़ाते हैं। विशेषज्ञ संगीतज्ञों और शिक्षकों ने इस कार्यक्रम में शामिल होकर छात्रों को मार्गदर्शन दिया, जिससे उन्हें मृदंग की तकनीकी विशेषताओं और उसके इतिहास के बारे में अधिक जानकारी मिली। इस कार्यक्रम ने कलाकारों के बीच एकता और संगीत प्रेम को बढ़ावा दिया, जिससे उपस्थित सभी लोगों ने आनंदपूर्ण अनुभव प्राप्त किया।

देव डोली समागम : लोकसंस्कृति के पुनर्जीवन की दिशा में पहला कदम

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में पहली बार आयोजित देव डोली समागम ने एक ऐतिहासिक अध्याय का सूत्रपात किया। मृत्युंजय सभागार में सम्पन्न इस भव्य आयोजन का उद्देश्य उत्तराखंड की लोकसंस्कृति को पुनः जीवंत करना था। इस समागम में माननीय श्रीमती ऋतु खंडूरी जी, अध्यक्ष, उत्तराखंड विधान सभा, ने मुख्य अतिथि के रूप में अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज की, और पूज्य स्वामी श्री ज्ञानानंद जी महाराज, प्रख्यात आध्यात्मिक गुरु, ने अपने ओजस्वी विचारों से सभा को प्रेरित किया।

इस ऐतिहासिक आयोजन का उद्घाटन देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा प्रतिनिधि डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं पधारे गणमान्य अतिथियों के कर कमलों से हुआ।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में पहली बार आयोजित देव डोली समागम में पधारे विशिष्ट अतिथि एवं उपस्थित सदस्य

अपने संबोधन में डॉ. पण्ड्या ने भारतीय संस्कृति की जीवंत धरोहर को संरक्षण देने और इसे आधुनिक युग के साथ जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से हम न केवल अपनी लोक परंपराओं का पुनर्निर्माण करते हैं, बल्कि भावी पीढ़ियों को भी अपनी जड़ों से जोड़ते हैं। यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के आदर्श वाक्य 'संस्कृति से आध्यात्मिक उत्थान' का जीवंत उदाहरण है।

समारोह में उत्तराखंड की अनमोल संस्कृति को सजीव रूप से प्रस्तुत किया गया, जिसमें देव डोलियों का भव्य आगमन और पूजा अनुष्ठान मुख्य आकर्षण रहे। विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं, संकाय सदस्यों और गणमान्य अतिथियों ने इसमें बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस अवसर पर सभी ने संकल्प लिया कि ऐसे सांस्कृतिक आयोजनों के माध्यम से हमारी प्राचीन परम्परायें और अधिक प्रखर होकर आगे बढ़ेंगी।

देव डोली समागम, जो विश्वविद्यालय के इतिहास में एक मील का पत्थर साबित हुआ, ने न केवल इस आयोजन में सम्मिलित लोगों को मंत्रमुग्ध किया, बल्कि देव संस्कृति विश्वविद्यालय के मिशन को भी एक नई दिशा दी। एक ऐसा मिशन जो आध्यात्मिक पुनर्जागरण और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण का प्रतीक है।

धर्म-अध्यात्म का मर्म बोध

धर्म अध्यात्म इतने प्रचलित शब्द हैं, कि भारत भूमि में क्या बच्चा, क्या बुढ़ा, क्या युवा, क्या महिला – सब इनको जानते हैं। जानते ही नहीं, किसी न किसी रुप में इन्हें अपने जीवन में जीने का प्रयास भी कर रहे होते हैं। लेकिन इस सबके बावजूद इनके बारे में भ्रम का कुहासा भी कम सघन नहीं है और धर्म-अध्यात्म के नाम पर नाना प्रकार के चित्र-विचित्र एवं हास्यास्पद कृत्यों को चारों ओर घटित होते देखा जा सकता है। सस्ते में बहुत कुछ लूटने-बटोरने के शार्टकट रास्तों को अपनाते लोगों को देखा जा सकता है।

आश्चर्य नहीं कि धर्म-अध्यात्म की समझ के अभाव में, अधिकाँश लोग सच्चे धार्मिक व आध्यात्मिक व्यक्ति की पहचान में प्राय: चूक कर बैठते हैं। बाहरी बेश-भूषा, रुप-रंग आदि को मानक मानते हुए लोग प्रभावित हो जाते हैं। इससे भी आगे किसी हठयोगी, कर्मकाण्डी, चमत्कार दिखाने वाले तांत्रिक-मांत्रिक को देखकर तो नतमस्तक ही हो बैठते हैं, जैसे धर्म-अध्यात्म का सार तत्व इनकी बाजीगरी में छिपा हुआ हो। लेकिन धर्म-अध्यात्म की डगर थोड़ी विचित्र है, रहस्यमयी है, निराली है। जिसको इसमें गहरे उतरे बिना, इसके मर्म को जीवन में धारण किए बाना, अस्तित्व की पहेली को सुलझाने की ईमानदार कवायद के बिना समझ पाना थोड़ा कठिन है। क्योंकि धर्म-अध्यात्म बाहरी कर्मकाण्ड, वेशभूषा, हठयोग व प्रदर्शन से अधिक एक सूक्ष्म तत्व है, जिसे बाहरी स्वरुप देखकर नहीं पहचाना जा सकता।

यह सच है कि जनसाधारण के लिए धर्म के गर्भ से ही अध्यात्म का उद्भव होता है। जैसे बच्चों की स्कूली पढ़ाई क ख ग से शुरु होती है, जहाँ क से कबूतर, ख खरगोश के बालबोध के साथ अक्षरज्ञान करवाते हुए आगे की शिक्षा दी जाती है। ऐसे ही अध्यात्म की गुह्यता में प्रवेश करने के लिए धर्म के कर्मकाण्डों, पूजा-पाठ व स्थूल उपकरणों का सहारा लिया जाता है। इसके लिए बाहरी वस्त्र, वेश व प्रतीकात्मक उपचारों को भी धारण करना पड़ सकता है।

लेकिन यह प्राथमिक पाठशाला भर है। धार्मिक क्रियाकलाप के साथ, स्वाध्याय-सतसंग का सहारा लेते हुए, व्यक्ति आस्तिकता के भाव को धारण करते हुए अध्यात्म की ओर प्रवृत्त होता है। मैं भी ईश्वर अंश अविनाशी हूँ, अमृतपुत्र हूँ और जीवन का सार तत्व अपने ही अंदर है और सारा संसार अंतर्निहित दिव्यता का ही विस्तार है, ऐसी जीवन दृष्टि के साथ अध्यात्म में प्रवेश पात्रता विकसित करते हुए साधक अस्तित्व की पहेली के समाधान के लिए गहराई में उतर पड़ता है।

व्यवहारिक रुप में धर्म और अध्यात्म की कसौटी मन की शांति, स्थिरता प्रसन्नता और सुकून से है। एक कर्मयोगी अपने कर्तव्य कर्म को करते हुए इन्हें उपलब्ध हो सकता है, जिसको सामान्य सी सांसारिक वेशभूषा में जीवनयापन करते हुए देखने पर पहचानने में भूल हो सकती है। हो सकता है कि वह धार्मिक कर्मकाण्ड में अधिक विश्वास न रखता हो, न ही भक्ति के लिए उसके पास अधिक समय हो, न ही किसी योगी की तरह लम्बे ध्यान में बैठता हो। लेकिन अपने कर्तव्य कर्म को ही भगवान मानते हुए चेतना की उच्च अवस्था की अग्रसर हो रहा हो। आश्चर्य नहीं की ऐसे कर्म में प्रवृत जुलाहा कबीर हो सकते हैं, मोची का काम करते हुए संत रविदास हो सकते हैं। कसाई धर्म निभाते हुए सदना संत हो सकते हैं। सामान्य से गृहस्थ नाग महाशय ईश्वरकोटी आत्मा हो सकते हैं। खेत में हल जोतता किसान, रेलवे में नौकरी करते युक्तेश्वर गिरि महायोगी हो सकते हैं। ऐसे ही पुराणों में वर्णित एक सामान्य सी गृहिणि, पतिव्रता स्त्री आध्यात्मिक चेतना के शिखर पर जी रही हो सकती है। ऐसे अनगिन उदाहरण हैं, जो धर्म-अध्यात्म की प्रचलित कसौटी के स्थूल मानदंडों पर खरा नहीं उतरते, लेकिन धर्म-अध्यात्म की कसौटी पर सौ टक्का खरा उतरते हैं।

इसी तरह रामकृष्ण परमहंस, महर्षि रमण, तैलंग स्वामी, देवरहा बाबा को बाहर से देखने पर पहली बारगी कौन उनके सिद्धत्व को पहचान पाता है। लेकिन पारखी लोग इनका सतसंग कर तर जाते हैं और कितनों को तरने का मार्ग दिखा जाते हैं।

इस युग में साधारण सी हवाई चप्पल के साथ खादी का धोती-कुर्ता पहने एक सामान्य से गृहस्थ को देखकर कौन अनुमान लगा सकता था कि कोई गायत्री का सिद्ध साधक, सम्पूर्ण आर्षवांड्मय का युगानुकूल भाष्य कर 3200 पुस्तकों का रचयिता, जीवन के हर विषय पर अपनी कलम चलाने वाला युग व्यास, युग की हर समस्या के समाधान प्रस्तुत करने वाले युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य 21वीं सदी उज्जवल भविष्य और युग परिर्वतन का युगांतरीय कार्य कर इस धराधाम से चले जाते हैं, जिनकी धर्म-अध्यात्म की युगानुकूल वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक व्याख्या आज भी लाखों-करोड़ों परिजनों का मार्गदर्शन कर रही है।

एक सच्चा धार्मिक एवं आध्यात्मिक व्यक्ति जीवन के अंदर और बाहर, अपने घर-परिवार, परिवेश और समाज में, राष्ट्र एवं विश्व में सत्यता, संवेदना, इंसानियत से युक्त धर्म की स्थापना का माध्यम बनता है, युग परिर्वतन के लिए उद्यत महाकाल की चेतना का संवाहक होता है।

संपादक की कलम से

जीवनमूल्यों पर संकट एवं शिक्षण संस्थानों की भूमिका

अखण्ड ज्योति से

मनुष्य धरती पर आता है तो एक लक्ष्य लेकर के आता है, एक उद्देश्य लेकर के आता है। चाहे वो उसे पूरा करे या न करे, पर हर मनुष्य के जन्म लेने से पहले उसके जीवन का एक निश्चित लक्ष्य व एक निर्धारित उद्देश्य होता है। यदि जीवन उद्देश्य से विहीन रह जाए, तो व्यक्तित्व के अंदर एक ऐसी रिक्तता, एक ऐसा खोखलापन भर जाता है, जिसे त्रासदीपूर्ण ही कहा जा सकता है। यदि मनुष्य द्वारा विकसित विद्याओं को ध्यान से देखें तो सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उन सबका उद्देश्य, जीवन में उद्देश्य की खोज ही है। चाहे क्षेत्र धर्म का हो या विज्ञान का, चाहे क्षेत्र दर्शन का हो या मनोविज्ञान का-इन सबका दूरगामी लक्ष्य जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करना ही कहा जा सकता है।

अमेरिका के एक विश्वविद्यालय में 60 ऐसे छात्रों का साक्षात्कार मनोवैज्ञानिकों ने लिया, जिन्होंने आत्महत्या का प्रयास किया था। सामान्य मत के विपरीत इनमें से 93 प्रतिशत छात्र/छात्राएँ ऐसे थे, जो शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी थे, कुशाग्र थे, सामाजिक गतिविधियों में कुशल थे, मिलनसार थे और आत्महत्या का प्रयास करने से पूर्व, उन्हें किसी भी प्रकार का मानसिक रोग या विकार नहीं था। उनसे पूछे जाने पर उनमें से 85 प्रतिशत ने * आत्महत्या करने के कारण के रूप में यह कहा कि उन्हें उनका जीवन अर्थहीन व दिशाविहीन लगने लगा था। स्पष्ट है कि मनुष्य सुख-साधनों से बढ़कर जीवन के लक्ष्य व उद्देश्य को प्राप्त करने को सोचता है और इसको प्राप्त करने पर ही जीवन को अर्थपूर्ण अनुभव करता है। जब अमेरिका जैसे देशों में जहाँ सुख-साधन पर्याप्त हैं, वहाँ ऐसी घटनाएँ अगणित रूप में घटने लगें तो ऐसा लगता है मानो हम एक स्वप्न से जाग रहे हों और हमें अब यथार्थता का एहसास हो रहा हो। स्वप्न यह कि यदि हम हर व्यक्ति को सुख के पर्याप्त साधन दे दें और उसके पास पैसा, घर, गाड़ी हो जाए तो उसका जीवन आनंद से भर जाएगा, परंतु ऐसा होता नहीं। जीवन सुविधामय हो जाने के बाद, मनुष्य यह सोचने को विवश हो जाता है कि जीवन का उद्देश्य क्या ?

साधनों के बढ़ जाने से जीवन में शांति नहीं आ जाती। शांति तो मात्र जीवन में उद्देश्य को प्राप्त करने से आती है। जैसा कि प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक अल्बर्ट कामस ने एक बार कहा था कि 'मनुष्य के सामने सही अर्थों में एक ही चुनौती है कि वह इस तथ्य का सम्यक मूल्यांकन कर सके कि जीवन को क्यों जिया जाए?'

पशुओं की तरह हम संवेगों से प्रभावित होकर जीवन को नहीं जीते हैं। पशुओं को जीवन जीने के लिए मात्र संवेगों की आवश्यकता होती है। भूख लगी तो खा लिया, प्यास लगी तो पी लिया।

मनुष्य इससे ऊपर के तल की भी सोचता है कि क्या खाया जाए, क्यों खाया जाए और कैसे खाया जाए। एक सामान्य-सी जैविक क्रिया के लिए इतना चिंतन मनुष्य कर सकता है तो स्वाभाविक ही है कि अन्य क्रियाकलापों के लिए, जीवन के लक्ष्य के लिए जो तड़प उसके मन में उठती होगी, उसकी तीव्रता कितनी होगी ? पूर्व में पुरखों से चली आ रहीं परंपराएँ, धर्म-धारणाएँ बहुत-सी ऐसी जिज्ञासाओं का समाधान ढूँढ़ने में मदद करती थीं, परंतु जबसे पारिवारिक ढाँचा व सामाजिक व्यवस्था चरमराई है- तब से ऐसा होना भी लगभग असंभव सा ही हो गया है।

मनुष्य के जीवन की इसी आधारभूत जिज्ञासा को ध्यान में रखते हुए प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक विक्टर फ्रैंकल ने एक नई मनोचिकित्सापद्धति प्रदान की, जिसका नाम 'लोगोथेरेपी' था। 'लोगो' शब्द लैटिन- ग्रीक से आया है- जिसका अर्थ उद्देश्य होता है। इस चिकित्सा के उन्होंने तीन आयाम दिए -जीवन का उद्देश्य ढूँढ़ने की इच्छा, जीवन का अर्थ और अर्थ चुनने की स्वतंत्रता। फ्रैंकल के अनुसार जो इन तीनों आयामों को अपने व्यक्तित्व में धारण करते हैं- वे स्वत: ही जीवन को अर्थपूर्ण बना लेते हैं।

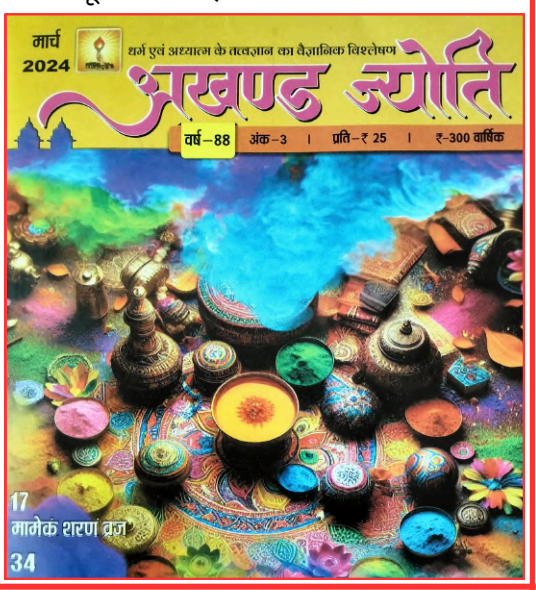

ऋषि चिंतन

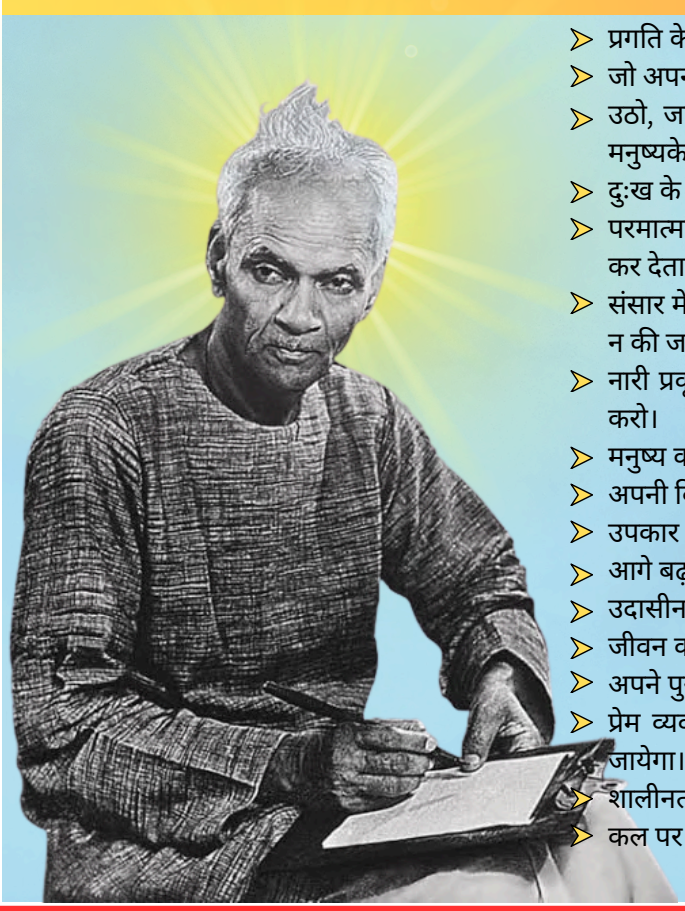

- प्रगति के लिये संघर्ष करो। अनीति को रोकने के लिए संघर्ष करो।
- जो अपना कर्तव्य करने से चूकता है वह एक महान लाभ से स्वयं को वंचित रखता है।
- उठो, जागो और तब तक मत रूको जब तक तुम्हे सफलता न मिल जाए। दु:ख और श्रम मनुष्यके परम मित्र हैं।
- दु:ख के बिना हृदय पवित्र नहीं होता और श्रम के बिना मनुष्यता का विकास नहीं होता।
- परमात्मा जिसे जीवन में कुछ विशेष अनुदान देना चाहता है उसकी सुविधाओं को समाप्त कर देता है।
- संसार में ऐसी कोई विभूति नहीं है जो तीव्र आकांक्षाऔर प्रबल पुरूषार्थ के आधार पर प्राप्त न की जा सकती हो।
- नारी प्रकृति की बेटी है, उसका हृदय कोमल है। उसका हृदय न दुखाओ, उस पर विश्वास करो।
- मनुष्य का स्वभाव नवीनता प्रिय है। अपना दीपक आप स्वयं बने ।
- अपनी विन्रमता दूसरों का सम्मान बोलने में मिठास यही व्यक्तित्व के प्रमुख हथियार है।
- उपकार सौदे की तरह मत करो। उसे कर्तव्य मानकर करने से ही संतोष मिलता है।
- आगे बढ़ना, उन्नति करना, ऊपर उठना, विकसित होना जीव का स्वाभाविक धर्म है।
- उदासीन एवं निराश व्यक्ति की समस्त शारीरिक व मानसिक शक्तियाँ नष्ट हो जाती है।
- जीवन का सच्चा सदुपयोग ही जीवन का महामंत्र हैं।
- अपने पुरूषार्थ से अर्जित ऐश्वर्य का ही दूसरा नाम सौभाग्य है।
- प्रेम व्यवहार संसार का प्रत्यक्ष अमृत रस हैं, जिसको दोगे वही प्रसन्न होकर तुम्हारा हो जायेगा।
- शालीनता बिना मोल मिलती है लेकिन उससे सब कुछ खरीदा जा सकता है। आज का काम कल पर मत टालिये। उज्जवल भविष्य के प्रति आशान्वित रहें।

शिक्षा: भविष्य की कुंजी

सपनों की उड़ान, ज्ञान की रोशनी,
हर किताब में छुपी है एक नई कहानी।
पढ़ाई के मार्ग में, चलें हम साथ,
सिखाती है शिक्षा, बने सभ्य-संस्कारवान।
शिक्षक हैं मार्गदर्शक, ज्ञान का दीप जलाते,
सपनों को साकार करने का हौसला बढ़ाते।
सीखने की यात्रा, अनंत है ये धारा,
हर पल में है शक्ति, हर क्षण है प्यारा।
शिक्षा का महत्व, जीवन की पहचान,
आओ मिलकर बढ़ाएं, ज्ञान का अम्बार।

- रितिष्का सिंह

Managing Editor:
Dr. Chinmay Pandya
Executive Editor:
Prof. Sukhnandan Singh
Input Head & Asst. Editor:
Dr. Deepak Kumar
Editorial Panel
Dr. Smita Vashishta, Dr. Ajay Nirala,
Mr. Saurabh Kumar, Mr. Rajat Pandey,
Mrs. Neha Singh, Mr. Vivek Pandey,
Deepshikha Kumari & Team JMC
Designing- Prakhar Bhadauriya

देसंविवि और शांतिकुंज के छात्रों ने राष्ट्रीय खेल-25 में जीता स्वर्ण व रजत पदक

◉ पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार के योग विज्ञान संकाय के प्रतिभाशाली छात्र विशाल द्विवेदी ने अल्मोड़ा में आयोजित 38वें राष्ट्रीय खेलों की ट्रेडिशनल योगासन प्रतियोगिता में रजत पदक जीतकर विश्वविद्यालय और योग समुदाय का गौरव बढ़ाया। यह उपलब्धि न केवल उनकी कठिन साधना और समर्पण का परिणाम है, बल्कि देव संस्कृति विश्वविद्यालय की उत्कृष्ट योग परंपरा और प्रशिक्षण प्रणाली का भी प्रमाण है। विशाल द्विवेदी को इस अद्भुत सफलता के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

इसी आयोजन के दौरान, शांतिकुंज के योगासना टीम इवेंट (दशावतार थीम) में रोहित यादव ने स्वर्ण पदक जीतकर हरिद्वार का नाम रोशन किया। रोहित का सपना एशियन गेम्स में भारत के लिए स्वर्ण पदक जीतने का है। शांतिकुंज लौटने पर रोहित ने संस्था की अधिष्ठात्री श्रद्धेया शैलदीदी से भेंट कर आशीर्वाद लिया। श्रद्धेया शैलदीदी ने रोहित को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दी और मार्गदर्शन करते हुए कहा कि रोहित का स्वर्ण पदक जीतना केवल उसकी कड़ी मेहनत का परिणाम नहीं, बल्कि शांतिकुंज की प्रेरणा का भी प्रतीक है। उन्होंने कहा कि आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें और आगामी खेलों में भी सफलता प्राप्त करें, शांतिकुंज हरिद्वार का नाम रोशन करें।

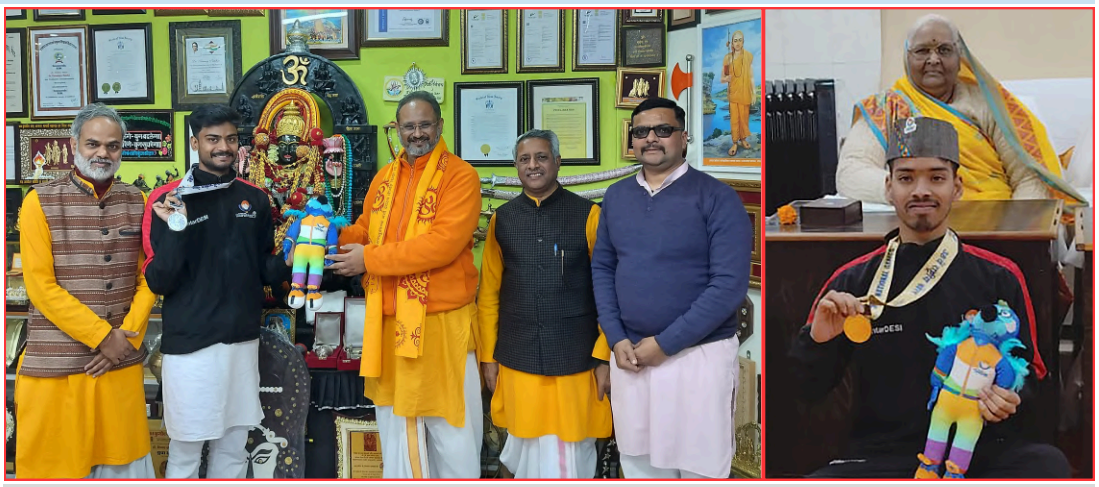

राष्ट्रीय खेल के विजेताओं को सम्मानित करते श्रद्धेया शैलदीदी और देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या

रोहित ने बताया कि उन्हें लगातार मार्गदर्शन श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, श्रद्धेया शैलदीदी और देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी से मिल रहा है, जिसकी मदद से वह अपने सपनों को साकार करने में सक्षम हो रहे हैं। रोहित के पिता श्री रविन्द्र यादव, जो शांतिकुंज कार्यकर्ता और योग प्रशिक्षक हैं, ने बताया कि रोहित दो वर्ष की आयु से ही योगाभ्यास कर रहा है और अब वह 150 से अधिक योगासनों को आसानी से कर लेता है। रबर ब्वाय के नाम से प्रसिद्ध रोहित यादव ने बताया कि उन्होंने अब तक राष्ट्रीय स्तर पर 4 स्वर्ण, 3 सिल्वर और 2 ब्रांज मेडल जीते हैं, साथ ही जिला और प्रांत स्तर पर 62 पदक भी प्राप्त किए हैं। उनकी बहन शांभवी यादव भी राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर कई पदक जीत चुकी हैं और वर्तमान में देव संस्कृति विश्वविद्यालय में अध्ययनरत हैं। शांतिकुंज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरी, गायत्री विद्यापीठ की व्यवस्था मंडल की प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या सहित शांतिकुंज कार्यकर्ताओं ने रोहित को 38वें नेशनल गेम्स-25 में स्वर्ण पदक जीतने पर बधाई दी। यह दोनों उपलब्धियाँ देव संस्कृति विश्वविद्यालय और शांतिकुंज के छात्रों के समर्पण, कठिन मेहनत और उत्कृष्टता को दर्शाती हैं।

विशाखापत्तनम में ज्योति कलश यात्रा का शुभारंभ

◉ पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

आगामी वर्ष शांतिकुंज की संस्थापिका माता भगवती देवी शर्मा जी एवं दिव्य अखण्ड दीप का शताब्दी वर्ष है। इस निमित्त सनातन संस्कृति से ओतप्रोत माता भगवती देवी शर्मा के विचारों को जन जन तक आलोकित करने के उद्देश्य देश-विदेश में ज्योति कलश यात्रा निकाली जा रही है। इसी शृंखला में गायत्री परिवार प्रमुखद्वय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं श्रद्धेया शैलदीदी के मार्गदर्शन में आंध्रप्रदेश के गायत्री चेतना केन्द्र विशाखापत्तनम से ज्योति कलश यात्रा का शुभारंभ हुआ। इस यात्रा का भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकया नायडू व देसंविवि के प्रतिकुलपति युवा आइकान डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने झंडी दिखाकर रवाना किया। इस दौरान युवा आइकान डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि गायत्री परिवार समाज व राष्ट्र निर्माण के लिए आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को केंद्र में रखकर कार्य कर रहा है। उन्होंने युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचारों के अनुसार विभिन्न समसामयिक विषयों पर चर्चा की। इससे पूर्व युवा आइकान डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने स्थित गायत्री चेतना केंद्र में नवनिर्मित मंदिर में आदिशक्ति माँ गायत्री माता की वैदिक कर्मकाण्ड के साथ प्राण प्रतिष्ठा की। इस दौरान आंध्रप्रदेश के कोने कोने से हजारों परिजनों सहित स्थानीय जन प्रतिनिधिगण भी मौजूद रहे।

शांतिकुंज ने 1280 जरूरतमंदों में बाटें कंबल

जरुरतमंदों में कंबल वितरण करते शांतिकुंज व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरी जी एवं कार्यकर्तागण

◉ पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

उत्तर भारत में इन दिनों पड़ रही कड़ी ठंड से साधुओं और खुले आसमान के नीचे रहने वाले लोगों को काफी परेशानी हो रही है। इन परिस्थितियों में शांतिकुंज अधिष्ठात्री श्रद्धेया शैलदीदी के मार्गदर्शन में व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरी के नेतृत्व में आपदा प्रबंधन टीम ने रात के अंधेरे में सर्वानंद घाट, शिव की पौडी, पावन धाम, खड़खड़ी आदि स्थानों में 1280 जरूरतमंदों को कंबल वितरित किए। यह कंबल उन लोगों को दिए गए, जो गंगा तट, पेड़ों और शांतिकुंज फ्लाई ओवर के नीचे रात बिता रहे थे। इनमें से अधिकांश लोग साधु और अन्य जरूरतमंद, जिन्हें ठंड से बचाव के लिए इस राहत सामग्री की आवश्यकता थी। उन्हें ठंड से राहत दिलाने में कारगर साबित हुआ है। शांतिकुंज के इस मानवता भरी पहल के लिए अनेक लोगों ने आभार व्यक्त किया। बता दें कि शांतिकुंज परिवार विगत कई दशकों से प्रत्येक वर्ष हरिद्वार के साधुओं व जरूरतमंदों को ठंड से बचाव के लिए कंबल बाँटते हैं। शांतिकुंज का यह कार्य समाज के प्रति उनकी संवेदनशीलता और दयालुता को दर्शाता है। शांतिकुंज अधिष्ठात्री स्नेहसलिला श्रद्धेया शैलदीदी ने कहा कि गायत्री परिवार अपने आराध्य पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्यजी द्वारा बताये गये सूत्र-पीड़ित मानवता की निःस्वार्थ भाव से की गयी सेवा-सहयोग ईश्वर आराधना समान है। इसमें अपनी क्षमतानुसार सेवा कार्य करते रहना चाहिए। शांतिकुंज इस दिशा में अपनी स्थापना काल से ही जरूरतमंदों की सेवा-सुश्रुषा करता आ रहा है। कंबल वितरित करने गयी टीम में इंद्रजीत सिंह, रामदास रघुवंशी, संजय, कृष्णा अमृते, अरुण, आलोक, दुर्गा आदि शामिल रहे।

श्रद्धेया शैलदीदी का जन्मदिन सादगी से मनाया गया

श्रद्धेया शैलजीजी का अभिनन्दन करते शांतिकुंज स्वयंसेवी

◉ पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

गायत्री परिवार की अधिष्ठात्री श्रद्धेया शैलदीदी का ७२वाँ जन्मदिन इस वर्ष सादगी और श्रद्धा के साथ मनाया गया। प्रातःकाल वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच दीपमहायज्ञ का आयोजन हुआ, जिसमें परिवार के सदस्य और श्रद्धालु एकत्रित होकर यज्ञ की आहुतियाँ दीं। इस मौके पर अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या ने श्रद्धेया शैलदीदी को मंगल तिलक किया और उन्हें पुष्पाहार भेंट किया। इस आयोजन के दौरान, शांतिकुंज, देसंविवि और गायत्री विद्यापीठ परिवार के सदस्यों ने भी श्रद्धेया शैलदीदी को पुष्पगुच्छ भेंटकर उनके दीर्घायु और अच्छे स्वास्थ्य की मंगलकामनाएँ दीं। श्रद्धेया शैलदीदी के जीवन के आदर्शों को याद करते हुए, समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए गायत्री परिवार के योगदान को रेखांकित किया गया। उनकी आत्मिक उन्नति, निःस्वार्थ सेवा और स्नेह बाँटने जैसे गुणों ने न केवल गायत्री परिवार, बल्कि समाज को भी दिशा और प्रेरणा दी। शांतिकुंज के नौनिहालों ने भी इस अवसर पर अपनी शुभेच्छाएँ व्यक्त की, जिससे आयोजन और भी आत्मीय हो गया। प्रातःकाल 27 कुण्डीय यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धेया शैलदीदी की उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु के लिए यज्ञाहुतियाँ डाली गईं। इस आयोजन का उद्देश्य न केवल उनके स्वास्थ्य की कामना करना था, बल्कि यह भी कि उनके जीवन के मूल्यों को समाज में फैलाया जा सके।

सायंकाल गीता जयंती के अवसर पर गीता पाठ और दीप यात्रा का कार्यक्रम भी उत्साहपूर्वक संपन्न हुआ। यह आयोजन शांति और साधना के वातावरण में हुआ, जो श्रद्धेया शैलदीदी के जीवन के आदर्शों को और अधिक सजीव करता है।

लातविया में गायत्री परिवार का हो रहा विस्तार

◉ पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

अखिल विश्व गायत्री परिवार विश्व के करीब अस्सी देशों में फैला हुआ है। सभी देशों के परिजन शांतिंकुज, हरिद्वार के प्रति के विशेष आस्था रखते हैं और अपने परिवार व समाज विकास के लिए सामूहिक गायत्री यज्ञ व विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन करते हैं। इन्हीं कार्यक्रमों के संचालन हेतु देवसंस्कृति विवि के प्रतिकुलपति युवा आइकान डॉ. चिन्मय पंड्या जी अपने यूरोप के प्रवास के दौरान लातविया पहुँचे। उन्होंने लातविया की राजधानी रीगा में नवगठित गायत्री परिवार के सहयोग से गायत्री यज्ञ का भव्य आयोजन का संचालन किया। यह आयोजन बाल्टिक देशों और भारत के बीच गहरे आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संबंधों को और सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। ज्ञात हो कि देव संस्कृति विश्वविद्यालय में एशिया का पहला और विश्व का सबसे बड़ा बाल्टिक संस्कृति एवं अध्ययन केंद्र स्थापित किया गया है, जहां लातवियाई परिजन लगातार आते हैं।

देव संस्कृति विवि के प्रतिकुलपति युवा आइकान डॉ. चिन्मय पंड्या जी के मार्गदर्शन में गायत्री परिवार की संस्थापिका माता भगवती देवी शर्मा की जन्मशताब्दी वर्ष 2026 कार्यक्रम की शृंखला के तहत पहली बार लातविया के गायत्री परिवार परिजनों ने ज्योति कलश यात्रा यज्ञ किया। इसमें सौ से अधिक लातवियाई परिजनों ने भाग लिया और अपने घरों में ज्योति कलश व देव स्थापना करवाया और नियमित गायत्री उपासना, साधना व आराधना का संकल्प लिया। युवा आइकान ने बताया कि यह ज्योति कलश अब लिथुआनिया की यात्रा करेगा। उल्लेखनीय है कि यह आयोजन माइनस तीन डिग्री ठंड के बीच संपन्न हुआ। बड़ी संख्या में आध्यात्मिक जिज्ञासुओं की उपस्थिति ने कार्यक्रम को विशेष रूप से प्रभावशाली बना दिया। इस आयोजन को बाल्टिक और भारतीय संस्कृति के बीच आध्यात्मिक सहयोग के एक नए अध्याय के रूप में देखा गया।

सामूहिक गायत्री यज्ञ का संचालन करते देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पंड्या जी एवं उपस्थित परिजन

देसंविवि और ग्रैफिटी मल्टीमीडिया के बीच समझौता

◉ पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

देव संस्कृति विश्वविद्यालय और मुंबई स्थित ग्रैफिटी मल्टीमीडिया प्राइवेट लिमिटेड के बीच शैक्षणिक समझौता हुआ। इस अनुबंध में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति युवा आइकान डॉ. चिन्मय पण्ड्या एवं ग्रैफिटी मल्टीमीडिया संस्थान के सीईओ श्री मुझल बी. श्रॉफ ने हस्ताक्षर किया। यह साझेदारी तीन साल की अवधि तक चलेगी और इसमें एआई, नरेटिव एआई और मल्टीमीडिया के क्षेत्र में संयुक्त अनुसंधान की दिशा में कदम बढ़ाए जाएंगे। इसके अंतर्गत दोनों संस्थान संयुक्त अनुसंधान पहलुओं, शैक्षणिक कार्यक्रमों और तकनीकी विशेषज्ञता के आदान-प्रदान पर ध्यान केंद्रित करेंगे। इस समझौते के तहत दोनों संस्थान मिलकर २डी और ३डी एनीमेशन परियोजनाओं के साथ-साथ उच्च-स्तरीय एआई अनुप्रयोगों पर काम करेंगे। इसका उद्देश्य अनुसंधान और विकास को बढ़ावा देना है, जिसमें सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संरक्षण भी शामिल होगा। इसके अलावा सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए भी यह समझौता काम करेगा, जो कि बहुत ही मूल्यवान कदम है।

शांतिकुंज में हुई सर्वे सन्तु निरामया: की सामूहिक प्रार्थना

युवा शक्ति को जागरूक करना और उन्हें सही मार्ग पर अग्रसर करना ही इस समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

अखिल विश्व गायत्री परिवार ने सर्वे सन्तु निरामया: की सामूहिक प्रार्थना के साथ वर्ष २०२५ की प्रथम किरण का स्वागत किया। इस अवसर पर आयोजित सामूहिक गायत्री आरती एवं ध्यान में देश विदेश से आये हजारों परिजनों ने प्रतिभाग किया। तो वहीं हजारों नर-नारियों ने आत्मिक प्रगति के लिए ध्यान साधना के साथ २७ कुण्डीय यज्ञशाला में विशेष आहुतियाँ डालकर अंग्रेजी कैलेण्डर वर्ष २०२५ का अभिनंदन किया।

अपने संदेश में अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या ने कहा कि यह साल युवाओं के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके माध्यम से नए अवसर और योजनाएँ उत्पन्न होने जा रही है, जो उन्हें अपनी प्रतिभा और शक्ति का सही उपयोग करने में मदद करेंगी। उन्होंने कहा कि इस वर्ष नारी सशक्तिकरण, युवा जागरण के अभियानों को और गति देना है। अधिष्ठात्री श्रद्धेया शैलदीदी ने कहा कि यह वर्ष अच्छे विचारों को क्रियान्वित करने और अधूरे सपनों को पूरा करने हेतु दृढ़ संकल्प के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने आया है। उन्होंने अपने व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयासों से एक स्वस्थ और समृद्ध समाज की दिशा में कार्य करने हेतु परिजनों का आवाहन किया। साथ ही अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुखद्वय ने समस्त गायत्री परिजनों सहित देशवासियों को नववर्ष की शुभकामनाएँ दीं। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति युवा आइकॉन डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि यह वर्ष एक नई ऊर्जा और सत्प्रेरणा का प्रतीक है, जो समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में सक्षम होगा। युवा शक्ति को जागरूक करना और उन्हें सही मार्ग पर अग्रसर करना ही इस समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है, ताकि हम आने वाले वर्षों में समाज और राष्ट्र की समृद्धि को सुनिश्चित कर सकें।

नव वर्ष के अवसर पर अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी से भेंट करते शांतिकुंज के कार्यकर्त्तागण

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान एवं शांतिकुंज परिवार ने गायत्री परिवार प्रमुखद्वय से भेंटकर नववर्ष के लिए विशेष मार्गदर्शन प्राप्त किया। साथ ही विभिन्न संस्कार बड़ी संख्या में सम्पन्न कराये गये।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित शिक्षक गरिमा शिविर

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में 5 से 7 जनवरी 2025 तक आयोजित शिक्षक गरिमा शिविर में गोरखपुर से आए 180 शिक्षकों ने भाग लिया। इस विशेष शिविर में सरकारी और निजी विद्यालयों के शिक्षक उपस्थित रहे, जिनका उद्देश्य शिक्षा के व्यापक दृष्टिकोण को समझना और अपने शिक्षण में इसे आत्मसात करना था।

आदरणीय प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पंड्या जी ने अपने सारगर्भित संबोधन में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के उद्देश्य और शिक्षा दर्शन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य शिक्षण को केवल किताबी ज्ञान तक सीमित रखना नहीं, बल्कि छात्रों के भीतर छिपी दिव्यता और नैतिक शक्तियों को जागृत करना है। शिक्षा केवल जानकारी देने का माध्यम नहीं, बल्कि विद्या वह शक्तिशाली साधन है, जो चरित्र निर्माण और समाजोत्थान की दिशा में कार्य करती है।

डॉ. पंड्या जी ने शिक्षकों को प्रेरित किया कि वे अपने छात्रों को जीवन में उच्च आदर्शों और मानवता की सेवा के प्रति प्रेरित करें। विश्वविद्यालय के "युग निर्माण" के लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने शिक्षकों से आग्रह किया कि वे अपने शिक्षण में उन मूल्यों को जोड़ें, जो समाज और राष्ट्र के भविष्य को सुदृढ़ बनाते हैं। शिक्षकों ने इस अवसर पर न केवल शिक्षा के उद्देश्य को पुन: परिभाषित किया, बल्कि इसे अपने शिक्षण पद्धति में शामिल करने का संकल्प भी लिया।

श्रद्धेया शैलदीदी ने मध्यप्रदेश के लिए पाँच दिव्य कलशों का किया पूजन

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में आज तीन दिवसीय ज्योति कलश यात्रा कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। इस कार्यशाला में मध्यप्रदेश के १५०० से अधिक गायत्री साधक भाग ले रहे हैं। इसका उद्देश्य प्रदेश के तरुणाई को सनातन संस्कृति की मुख्य धारा से जोड़ना है और उन्हें सकारात्मक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करना है।

इस दौरान शांतिकुंज की अधिष्ठात्री स्नेहसलिला श्रद्धेया शैलदीदी ने वैदिक कर्मकाण्ड के बीच मध्यप्रदेश के लिए पांच दिव्य कलशों का पूजन किया और उन्हें मध्यप्रदेश से आये हुए परिजनों को सौंपा। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि युगऋषि पूज्य गुरुदेव मध्यप्रदेश को हमेशा अपना हृदय स्थल मानते रहे।

जोन समन्वयक डॉ. ओपी शर्मा ने ज्योति कलश यात्रा का स्वरूप और क्रियान्वयन के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि युगऋषि पूज्य आचार्यश्री द्वारा प्रज्वलित सिद्ध अखण्ड दीपक से प्रकाश को लेकर दिव्य ज्योति कलश मध्यप्रदेश के गाँव- गाँव और शहर- शहर पहुंचेगी, जिससे लोगों के बीच एक नई अलख जागृत होगी। डॉ. शर्मा ने कहा कि इस पवित्र यात्रा में हम सभी को सक्रिय रूप से भागीदारी करनी है, जिससे दिव्य ज्योति का प्रकाश जन जन तक पहुंचे और और समाज में सकारात्मक परिवर्तन हो सके। श्री जगदीश कुलमी, प्रो. विश्व प्रकाश त्रिपाठी, प्रो प्रमोद भटनागर सहित कई विषय विशेषज्ञों ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर मध्यप्रदेश के कोने कोने से आये १५०० से अधिक भाई बहिन उपस्थित रहे।

ज्योति कलश यात्रा समारोह में उपस्थित मध्यप्रदेश के आत्मीय परिजन

जम्मू कश्मीर, उत्तराखंड सहित छ: राज्यों के ज्योति कलश रथ रवाना

उत्तराखंड, जम्मू कश्मीर, हरियाणा सहित छह राज्यों के ज्योति कलश रथ का विधिपूर्वक पूजन कर उन्हें रवाना करते हुए शांतिकुंज परिजन

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

गीता जयंती के पावन अवसर पर गायत्री परिवार के प्रमुखद्वय श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या और स्नेहमयी श्रद्धेया शैलदीदी ने उत्तराखंड, जम्मू कश्मीर, हरियाणा सहित छह राज्यों के ज्योति कलश रथ का विधिपूर्वक पूजन कर उन्हें रवाना किया।

इस यात्रा का आयोजन वर्ष 2026 में गायत्री परिवार की संस्थापिका माता भगवती देवी शर्मा और सिद्ध अखंड दीप की शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में किया जा रहा है। इसके तहत देश भर में ज्योति कलश यात्रा के माध्यम से सनातन संस्कृति की धारा से जन-जन को प्रकाशित करने का विशेष अभियान चलाया जाएगा।

शांतिकुंज व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरी ने बताया कि उत्तराखंड, हरियाणा, जम्मू कश्मीर, पंजाब, हिमाचल प्रदेश और चंडीगढ़ के लिए सिद्ध अखंड दीप से ऊर्जा लेकर ज्योति कलश रथ रवाना हुआ है। यह यात्रा इन छह राज्यों के हर गाँव और शहर में सनातन संस्कृति को फैलाने का कार्य करेगी। इस रथ के साथ एक-एक ज्ञानयज्ञ हेतु साहित्य रथ भी है। श्री तिवारी ने यह भी बताया कि पूरे देश के लिए अलग-अलग यात्रा निकल रही हैं। इस अवसर राष्ट्रीय जोनल समन्वयक डॉ ओपी शर्मा, जोन समन्वयक श्री वीरेन्द्र तिवारी सहित उत्तराखंड, हरियाणा, जम्मू कश्मीर आदि प्रांतों से परिजन उपस्थित रहे।

ऑल इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स 2024

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

KIIT यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर, उड़ीसा में आयोजित ऑल इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स 2024 में देव संस्कृति विश्वविद्यालय की महिला योगासन टीम ने शानदार प्रदर्शन किया। इस प्रतियोगिता में ज्योति, ज्योतिका, अंशिका पटेल, तनिष्क, खुशी वर्मा, और साक्षी ने रजत पदक प्राप्त किया, जबकि नितेश साहू ने इंडिविजुअल इवेंट में छठा स्थान हासिल किया। इसके साथ ही सुमन प्रिया ने एकल प्रतियोगिता में रजत पदक जीता।

विजयी टीम के सदस्य इस सफलता के उपरांत देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी से भेंट करने पहुंचे। इस अवसर पर डॉ. पण्ड्या जी ने उन्हें शुभाशीर्वाद देते हुए उनकी उपलब्धियों के लिए बधाई दी और भविष्य में और ऊंचाइयों तक पहुंचने के लिए प्रेरित किया।

इस सफलता के बाद सभी विजेता छात्र-छात्राएं खेलो इंडिया गेम्स के लिए चयनित हुए हैं। इसके अतिरिक्त, 38वें नेशनल गेम्स के लिए पुरुष वर्ग में विशाल द्विवेदी और महिला वर्ग में ज्योति का चयन हुआ है, जो उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले में आयोजित होने जा रहे हैं।

जोनल स्तरीय बैंड प्रतियोगिता में गायत्री विद्यापीठ की छात्राएं रहीं अव्वल

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

गायत्री विद्यापीठ शांतिकुंज की बैंड टीम ने लखनऊ में आयोजित जोनल स्तरीय बैंड प्रतियोगिता में उत्तराखण्ड के साथ ही गायत्री विद्यापीठ का नाम रोशन किया और सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस शानदार सफलता के पीछे 25 छात्राओं की मेहनत और समर्पण था, जो ब्रास बैण्ड टीम का हिस्सा थीं। प्रतियोगिता के दौरान टीम ने राष्ट्रीय, गढ़वाली और भक्ति गीतों की धुनों को बैंड, ट्रंपेट, सेक्सोफोन जैसे वाद्ययंत्रों के साथ प्रस्तुत किया, जिससे उन्होंने दर्शकों का दिल जीत लिया। इस प्रतियोगिता में उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश सहित 10 राज्यों की बैंड टीमों ने भाग लिया। गायत्री विद्यापीठ की इस टीम की सफलता ने एक बार पुनः यह साबित किया कि संगीत और कला के क्षेत्र में उत्तराखण्ड का योगदान अद्वितीय है।

गायत्री विद्यापीठ की जीत पर गायत्री विद्यापीठ की अभिभाविका श्रद्धेया शैलदीदी, विद्यापीठ की व्यवस्था मण्डल की प्रमुख श्रीमती शैफाली पण्ड्या, व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरी, प्रधानाचार्य श्री सीताराम सिन्हा सहित विद्यापीठ व शांतिकुंज परिवार ने बधाई दी। सभी ने बैंड टीम की सफलता को संस्थान के लिए गर्व का क्षण बताया और उनकी मेहनत को सराहा।

अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या ने कहा कि यह सफलता न केवल गायत्री विद्यापीठ के लिए, वरन् उत्तराखंड राज्य के लिए भी गौरव की बात है। हमारे बच्चों ने जोनल स्तर पर एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। श्रद्धेया शैलदीदी ने बच्चों की कड़ी मेहनत और समर्पण की सराहना की और उन्हें बधाई दी। गायत्री विद्यापीठ के प्रधानाचार्य श्री सीताराम सिन्हा सहित अनेक लोगों ने नौनिहालों की मेहनत व लगन की सराहना करते हुए जीत की बधाई दी।

गायत्री विद्यापीठ की बैंड टीम जोनल स्तरीय बैंड प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर श्रद्धेय द्वै का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

देसंविवि और एप्सिलॉन क्रिएटिव एजेंसी के बीच साझेदारी

◉ पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार और एप्सिलॉन क्रिएटिव एजेंसी गुरुग्राम के बीच एक महत्वपूर्ण समझौता पर हस्ताक्षर हुआ। इस साझेदारी का उद्देश्य ३डी तकनीक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) एआर व वीआर और जेनरेटिव एआई जैसे क्षेत्रों में संयुक्त अनुसंधान और नवाचार को प्रोत्साहित करना है। इसके तहत दोनों संस्थाएं संयुक्त रूप से अत्याधुनिक तकनीकी अनुसंधान, परियोजनाओं और विकास कार्यों पर काम करेंगी, जिससे डिजिटल प्रौद्योगिकी और नवाचार के क्षेत्र में नए अवसर पैदा होंगे । समझौते के अनुसार, विभिन्न कार्यशालाओं, परियोजनाओं और जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा, जिनका उद्देश्य शिक्षा और अनुसंधान को नई दिशा प्रदान करना है ।

इस समझौते पर देसंविवि के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पंड्या और एप्सिलॉन क्रिएटिव एजेंसी (एलएलपी) के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री नितिन कुमार ने हस्ताक्षर किया। यह समझौता तीन वर्षों की अवधि के लिए प्रभावी रहेगा, जिसे आपसी सहमति से आगे बढ़ाया जा सकता है। दोनों संस्थाएं मिलकर शैक्षणिक और तकनीकी क्षेत्र में समाज के व्यापक हित के लिए महत्वपूर्ण योगदान देने हेतु प्रतिबद्ध हैं, जिससे छात्र, शोधकर्ता और समाज को लाभ होगा ।

हिन्दी, मराठी भाषा में आडियो बुक के साथ विभिन्न पुस्तकों का विमोचन

शांतिकुंज में आयोजित वसंत पर्व में उपस्थित गायत्री परिजन एवं उनको संबोधित करते अखिल विश्व गायत्री प्रमुखद्वय श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं श्रद्धेया शैलजीजी

◉ पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में वसंतोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर अखिल विश्व गायत्री प्रमुखद्वय श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं श्रद्धेया शैलदीदी ने विश्वभर के गायत्री साधकों को वासंती उल्लास की शुभकामनाएँ दीं। सरस्वती पूजन, गुरुपूजन एवं पर्व पूजन के साथ हजारों साधकों ने भावभरी पुष्पांजलि अर्पित कीं। इस दौरान कई आडियो बुक, प्रज्ञागीत सहित अनेक साहित्यों का विमोचन किया गया।

वसंतोत्सव के मुख्य कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या ने कहा कि यह समय बदलाव की बयार लेकर आया है। सम्पूर्ण समाज, देश में बदलाव देखने को मिल रहा है। हम सभी के जीवन में भी बदलाव आ रहा है। उन्होंने कहा कि युगऋषि पूज्य पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने समाज में क्रांति लाने के लिए हम बदलेंगे, युग बदलेगा का जो नारा दिया है वह अब दिखने लगा है। हम सभी को इसे आत्मसात करना चाहिए। गायत्री परिवार के अभिभावक श्रद्धेय डॉ. पण्ड्या ने कहा कि पूज्य गुरुदेव के सत्साहित्य ने करोड़ों लोगों के जीवन में काफी बदलाव किया है, इसका विस्तार करना समय की मांग है। रुग्ण (कमजोर) परिवार, समाज को इससे संजीवनी मिलेगी।

संस्था की अधिष्ठात्री श्रद्धेया शैलदीदी ने कहा कि पूज्य गुरुदेव को उनके सद्गुरु ने वर्ष १९२६ की वसंत पंचमी के दिन ही दर्शन दिया और भविष्य के लिए मार्गदर्शन दिया। जब भक्त प्रहलाद, स्वामी विवेकानंद, महाराणा प्रताप सहित अनेकानेक के जीवन में वसंत आया, तब उनके जीवन में बदलाव आया। उन्होंने कहा कि यह समय आत्मनिर्माण, समाज सुधार और हर व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का है। उन्होंने कहा कि अखिल विश्व गायत्री परिवार का उद्देश्य केवल व्यक्तियों का उद्धार नहीं, बल्कि समग्र समाज और राष्ट्र का उत्थान है। इस अवसर पर गायत्री परिवार प्रमुखद्वय ने प्रज्ञा अभियान (पाक्षिक समाचार पत्र) का म.प्र. संस्करण तथा चेतना की शिखर यात्रा, वंदनीया माताजी की जीवन दर्शन सहित अनेक हिन्दी व मराठी पुस्तकों का आडियोबुक व प्रज्ञागीत सहित अन्य का विमोचन किया।

विभिन्न संस्कार निःशुल्क सम्पन्न -

गायत्री परिवार प्रमुखद्वय ने सैकड़ों लोगों को गुरुदीक्षा दी, तो वहीं देश के विभिन्न राज्यों से आये बटुकों ने यज्ञोपवीत संस्कार कराये। नामकरण, मुण्डन, विद्यारंभ, विवाह सहित कई संस्कार बड़ी संख्या में सम्पन्न हुए। समस्त संस्कार निःशुल्क सम्पन्न कराये गये। सायं दीपमहायज्ञ में पूज्य आचार्यश्री के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के संकल्प लिये गये।

> बदलाव की बयार लेकर आया है यह समय
>
> **- कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या**

> जीवन में वासंती उल्लास लाता है यह महापर्व
>
> **-शांतिकुंज अधिष्ठात्री श्रद्धेया शैलजीजी**

ज्योति कलश यात्रा से प्रकाशित होगा उ.प्र. का प्रत्येक गाँव, शहर

अखिल विश्व गायत्री परिवार के सदस्य दिव्य कलश के साथ रैली में प्रतिभाग करते हुए

◉ पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में आयोजित तीन दिवसीय ज्योति कलश यात्रा कार्यशाला का आज समापन हो गया। इस कार्यशाला में ज्योति कलश यात्रा के लिए रूपरेखा और रोडमैप तैयार किया गया, जिससे इस कार्यक्रम को बड़े पैमाने पर विस्तार दिया जा सके। समापन अवसर पर ज्योति कलशों के साथ एक भव्य रैली भी निकाली गई।

अखिल विश्व गायत्री परिवार की प्रमुख श्रद्धेया शैलदीदी ने उत्तर प्रदेश के लिए ज्योति कलशों का वैदिक पद्धति से पूजन किया और यह आह्वान किया कि उत्तर प्रदेश के प्रत्येक गाँव, कस्बे और शहर तक इस यात्रा का विस्तार किया जाए। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश वह पवित्र भूमि है जहाँ प्रभु श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण जैसे महान देवों का जन्म हुआ। इस प्रदेश की ऊर्जा का प्रभाव पूरे भारत वर्ष में फैलता रहा है। आज यहाँ के लोगों को ज्योति कलश यात्रा के माध्यम से पुनः जागृत करना है। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने अपने वीडियो संदेश में कहा कि ज्योति कलश यात्रा को उत्तर प्रदेश के प्रत्येक गाँव-गाँव, गली-गली में लेकर जाना है और सनातन संस्कृति की धारा और अखण्ड ज्योति के प्रकाशपुंज से प्रत्येक सोते हुए व्यक्ति को जगाना है।

कार्यशाला में विषय विशेषज्ञों ने गायत्री परिवार की संस्थापिका माता भगवती देवी शर्माजी की जन्मशताब्दी वर्ष और सन् 1926 से सतत प्रज्वलित सिद्ध अखण्ड दीपक की शताब्दी वर्ष के अंतर्गत निकाली जा रही ज्योति कलश यात्रा की रूपरेखा तैयार की। तीन दिन चले इस शिविर में विहिप के उपाध्यक्ष श्री चंपत राय, युवा आइकॉन डॉ. चिन्मय पण्ड्या, शांतिकुंज व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरी, डॉ. ओपी शर्मा आदि ने भी संबोधित किया।

श्रद्धेया शैलदीदी ने दक्षिण भारत हेतु ज्योति कलश का किया पूजन

अखिल विश्व गायत्री परिवार की अधिष्ठात्री श्रद्धेया शैलदीदी ने आठ दिव्य कलशों का वैदिक मंत्रोच्चार के बीच किया पूजन

◉ पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में तीन दिवसीय ज्योति कलश यात्रा कार्यशाला का शुभारंभ हुआ है। शांतिकुंज के वरिष्ठ प्रतिनिधियों द्वारा प्रथम सत्र का दीप प्रज्वलन के साथ शुभारंभ हुआ। इस यात्रा का उद्देश्य दक्षिण भारत में जन जागरण फैलाना है, जिससे लोगों को समाज और जीवन मूल्य और आध्यात्मिक जागरूकता के प्रति जागरूक किया जा सके और समाज में अच्छाई और सकारात्मकता का प्रचार-प्रसार हो सके।

वर्ष २०२६ गायत्री परिवार के संस्थापक पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रज्वलित अखण्ड ज्योति का शताब्दी वर्ष है। देश भर में जनजागरण हेतु गायत्री तीर्थ शांतिकुंज हरिद्वार से देश भर में ज्योति कलश यात्रा निकाली जा रही है। इसी क्रम में दक्षिण भारत के राज्यों हेतु अखिल विश्व गायत्री परिवार की अधिष्ठात्री श्रद्धेया शैलदीदी ने आठ दिव्य कलशों का वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूजन किया और कर्नाटक, तमिलनाडू, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, से आये परिजनों को सौंपा।

इस अवसर पर श्रद्धेया शैलदीदी ने कहा कि हिमालय की छाया में बसा शांतिकुंज से ज्योति कलश का प्रवाह दक्षिण भारत के राज्यों को प्रकाशित करेगा। हमारे आराध्यदेव पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने सम्पूर्ण भारत को एक परिवार के रूप में माना है। शिविर समन्वयक श्री परमानंद द्विवेदी ने बताया कि दक्षिण भारत के कर्नाटक, तमिलनाडू, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, और केरल के लिए अलग अलग ज्योति कलश यात्रा निकाली जायेगी, जो प्रत्येक गाँव, कस्बा, शहर में अलख जगायेगी। ज्योति कलश यात्रा कार्यशाला तीन दिन चलेगी, जिसमें शांतिकुंज व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरी, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति युवा आइकान डॉ. चिन्मय पण्ड्या, शांतिकुंज महिला मण्डल प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या सहित अनेक विषय विशेषज्ञ संबोधित करेंगे। इस कार्यशाला में कर्नाटक, तमिलनाडू, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, और केरल से आये दो सौ से अधिक भाई-बहिन शामिल हैं।

महाकुंभ मेला 2025: आस्था, श्रद्धा एवं समर्पण की त्रिवेणी संगम

◉ हेमा वर्मा

आस्था, विश्वास, सौहार्द एवं संस्कृतियों के मिलन का पर्व है "कुम्भ"। ज्ञान, चेतना और उसका परस्पर मंथन कुम्भ मेले का वो आयाम है जो आदि काल से ही हिन्दू धर्मावलम्बियों की जागृत चेतना को बिना किसी आमन्त्रण के खींच कर ले आता है। कुम्भ पर्व किसी इतिहास निर्माण के दृष्टिकोण से नहीं शुरू हुआ था अपितु इसका इतिहास समय के प्रवाह से साथ स्वयं ही बनता चला गया। वैसे भी धार्मिक परम्पराएं हमेशा आस्था एवं विश्वास के आधार पर टिकती हैं न कि इतिहास पर। यह कहा जा सकता है कि कुम्भ जैसा विशालतम् मेला संस्कृतियों को एक सूत्र में बांधे रखने के लिए ही आयोजित होता है।

कुम्भ का शाब्दिक अर्थ कलश है। यहाँ 'कलश' का सम्बन्ध अमृत कलश से है। बात उस समय की है जब देवासुर संग्राम के बाद दोनों पक्ष समुद्र मंथन को राजी हुए थे। मथना था समुद्र तो मथनी और नेति भी उसी हिसाब की चाहिए थी। ऐसे में मंदराचल पर्वत मथनी बना और नागवासुकि उसकी नेति। मंथन से चौदह रत्नों की प्राप्ति हुई जिन्हें परस्पर बाँट लिया गया परन्तु जब धन्वन्तरि ने अमृत कलश देवताओं को दे दिया तो फिर युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई। तब भगवान् विष्णु ने स्वयं मोहिनी रूप धारण कर सबको अमृत-पान कराने की बात कही और अमृत कलश का दायित्व इंद्र-पुत्र जयंत को सौपा। अमृत-कलश को प्राप्त कर जब जयंत दानवों से अमृत की रक्षा हेतु भाग रहे थे तभी इसी क्रम में अमृत की बूंदे पृथ्वी पर चार स्थानों पर गिरी- हरिद्वार, नासिक, उज्जैन और प्रयागराज। चूँकि विष्णु की आज्ञा से सूर्य, चन्द्र, शनि एवं बृहस्पति भी अमृत कलश की रक्षा कर रहे थे और विभिन्न राशियों (सिंह, कुम्भ एवं मेष) में विचरण के कारण ये सभी कुम्भ पर्व के द्योतक बन गये। इस प्रकार ग्रहों एवं राशियों की सहभागिता के कारण कुम्भ पर्व ज्योतिष का पर्व भी बन गया। जयंत को अमृत कलश को स्वर्ग ले जाने में 12 दिन का समय लगा था और माना जाता है कि देवताओं का एक दिन पृथ्वी के एक वर्ष के बराबर होता है। यही कारण है कि कालान्तर में वर्णित स्थानों पर ही ग्रह-राशियों के विशेष संयोग पर 12 वर्षों में कुम्भ मेले का आयोजन होने लगा।

धार्मिकता एवं ग्रह-दशा के साथ-साथ कुम्भ पर्व को तत्त्वमीमांसा की कसौटी पर भी कसा जा सकता है, जिससे कुम्भ की उपयोगिता सिद्ध होती है। कुम्भ पर्व का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि यह पर्व प्रकृति एवं जीव तत्त्व में सामंजस्य स्थापित कर उनमें जीवनदायी शक्तियों को समाविष्ट करता है। प्रकृति ही जीवन एवं मृत्यु का आधार है, ऐसे में प्रकृति से सामंजस्य अति-आवश्यक हो जाता है। कहा भी गया है "यद् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे" अर्थात् जो शरीर में है, वही ब्रह्माण्ड में है, इस लिए ब्रह्माण्ड की शक्तियों के साथ पिण्ड (शरीर) कैसे सामंजस्य स्थापित करे, उसे जीवनदायी शक्तियाँ कैसे मिले इसी रहस्य का पर्व है कुम्भ। विभिन्न मतों-अभिमतों-मतान्तरों के व्यावहारिक मंथन का पर्व है-'कुम्भ', और इस मंथन से निकलने वाला ज्ञान-अमृत ही कुम्भ-पर्व का प्रसाद है। इस बार महाकुम्भ मेला का आयोजन प्रयागराज में किया गया, जो 13 जनवरी से 26 फरवरी 2025 तक चला।

परिक्षा पर चर्चा : मोदी जी का प्रेरणादायक संदेश

◉ रितिष्का सिंह

परीक्षा पे चर्चा" भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा आयोजित एक अभिनव पहल है, जो छात्रों, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर बन गई है। इस पहल का उद्देश्य छात्रों को परीक्षाओं के दबाव से मुक्त करना और उन्हें आत्मविश्वास से भरा हुआ जीवन जीने के लिए प्रेरित करना है। प्रधानमंत्री मोदी ने इस मंच के माध्यम से छात्रों से सीधे संवाद किया, ताकि वे अपनी चिंता, भय और तनाव को साझा कर सकें और उनसे निपटने के उपाय जान सकें।

परीक्षा पे चर्चा की शुरुआत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2018 में परीक्षा पे चर्चा नामक पहल की शुरुआत की थी। यह कार्यक्रम छात्रों के लिए एक प्रकार का वार्षिक संवाद सत्र है, जिसमें प्रधानमंत्री मोदी विद्यार्थियों से उनके अनुभवों,

समस्याओं और चिंताओं के बारे में बात करते हैं। इस मंच पर छात्रों को परीक्षा से जुड़े मानसिक तनाव, समाजी अपेक्षाएं और पारिवारिक दबाव से संबंधित सवाल पूछने का अवसर मिलता है।

छात्रों के मानसिक दबाव को समझना

भारतीय समाज में परीक्षाओं को लेकर एक विशिष्ट दबाव होता है। छात्रों पर अच्छे अंक लाने का दबाव, माता-पिता की अपेक्षाएँ और समाज में सफलता की परिभाषा को लेकर जो दबाव है, वह कभी-कभी छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालता है। प्रधानमंत्री मोदी ने हमेशा इस मुद्दे पर जोर दिया है कि छात्र खुद को किसी भी परिस्थिति में दबाव में न महसूस करें।

अभिभावकों की भूमिका

प्रधानमंत्री मोदी ने हमेशा यह स्पष्ट किया कि अभिभावकों का रोल बहुत महत्वपूर्ण होता है। वह हमेशा कहते हैं कि माता-पिता को अपने बच्चों पर बिना दबाव डाले उन्हें स्वतंत्रता देनी चाहिए। उन्हें उनके स्वयं के विचारों और इच्छाओं का सम्मान करना चाहिए, ताकि बच्चे अपनी क्षमताओं को पहचान सकें और बिना किसी मानसिक तनाव के आगे बढ़ सकें।

परीक्षा पे चर्चा" का उद्देश्य और प्रभाव

परीक्षा पे चर्चा का मुख्य उद्देश्य यह है कि वह छात्रों को यह समझाने में मदद करें कि परीक्षा जीवन का अंत नहीं है। यह केवल एक अवसर है, जो किसी की पूरी क्षमता को साबित करने का तरीका नहीं हो सकता।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का भविष्य और उसके प्रभाव

◉ शाम्भवी शुक्ला

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) तकनीक वर्तमान समय में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी बदलाव लेकर आई है। यह तकनीक मानव मस्तिष्क की तरह सोचने, समझने, सीखने और निर्णय लेने की क्षमता रखने वाली मशीनों को बनाने की दिशा में काम करती है। इसके द्वारा हम ऐसे सिस्टम और सॉफ़्टवेयर बना सकते हैं, जो किसी विशिष्ट कार्य को इंसान की तरह समझकर और निर्णय लेकर अंजाम देते हैं। यह तकनीक पहले ही कई क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुकी है, और भविष्य में इसके विकास के साथ यह हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन जाएगी। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की शुरुआत 1950 के दशक में हुई थी, जब एलन ट्यूरिंग जैसे वैज्ञानिकों ने इसके मूल सिद्धांतों पर काम करना शुरू किया। ट्यूरिंग टेस्ट, जो AI को मानव मस्तिष्क से तुलना करता है, आज भी इस क्षेत्र में एक मील का पत्थर माना जाता है। लेकिन पिछले कुछ दशकों में, विशेष रूप से 21वीं सदी में, AI में अभूतपूर्व विकास हुआ है। मशीन लर्निंग और डीप लर्निंग जैसे उपक्षेत्रों ने AI को पूरी दुनिया में चर्चित किया है। ये तकनीकें सिस्टम को डेटा से सीखने और भविष्यवाणियाँ करने में सक्षम बनाती हैं। आजकल, स्वास्थ्य क्षेत्र में AI ने मेडिकल इमेजिंग, रोग निदान, और दवाओं के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। AI आधारित सॉफ़्टवेयर अब डॉक्टरों की सहायता के रूप में कार्य कर रहे हैं, जिससे निदान की प्रक्रिया अधिक सटीक और तेज़ हो गई है। उदाहरण के लिए, कैंसर जैसी जटिल बीमारियों का जल्दी और सही निदान AI की मदद से संभव हो रहा है। इसके अलावा, मेडिकल डेटा के विश्लेषण से नई दवाओं का निर्माण भी AI के माध्यम से हो रहा है। वहीं, शिक्षा क्षेत्र में भी AI का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। AI आधारित ट्यूटरिंग सिस्टम छात्रों के व्यक्तिगत अध्ययन की गति और शैली के अनुसार उन्हें मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं। ये ट्यूटरिंग सिस्टम छात्र के ज्ञान स्तर को समझकर उन्हें अनुकूलित शैक्षिक सामग्री प्रदान करते हैं।

इसके अलावा, AI की मदद से शिक्षा के क्षेत्र में प्रशासनिक कार्यों को भी स्वचालित किया जा रहा है जिससे शैक्षिक संस्थानों में कार्यकुशलता बढ़ रही है व्यवसायिक क्षेत्र में AI का उपयोग सबसे अधिक देखा जा रहा है। ग्राहक सेवा, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन, विपणन और वित्तीय सेवाओं में AI का लाभ उठाया जा रहा है।

38वें राष्ट्रीय खेलों का सफल आयोजन: उत्तराखंड में ऐतिहासिक क्षण

◉ गौरी दीक्षित

38वें राष्ट्रीय खेलों का आयोजन उत्तराखंड में एक ऐतिहासिक सफलता के रूप में संपन्न हुआ है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा उद्घाटन के बाद, ये खेल एक बड़े महाकुंभ का रूप ले चुका है। जिसमें खिलाड़ियों और दर्शकों का उत्साह देखने लायक था। इस आयोजन ने न केवल देश भर के खिलाड़ियों को एक मंच प्रदान किया, बल्कि उत्तराखंड को खेलों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और समर्पण को भी प्रदर्शित करने का अवसर दिया।

प्रधानमंत्री मोदी के उद्घाटन समारोह के बाद, मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, केंद्रीय खेल मंत्री मनसुख मांडविया और भारतीय ओलंपिक संघ की अध्यक्ष पीटी उषा ने भी इस आयोजन की सराहना की। इस खेल महाकुंभ में कुल 35 खेलों की 45 स्पर्धाओं में 9720 खिलाड़ियों ने भाग लिया, और 3674 पदकों के लिए उन्होंने अपना पूरा दमखम लगाया। उद्घाटन के दौरान इस आयोजन में दो प्रदर्शनी खेलों का भी आयोजन किया गया, जो दर्शकों के बीच आकर्षण का केंद्र बने। प्रधानमंत्री मोदी ने देहरादून पहुंचने के बाद राज्य की विभिन्न परियोजनाओं का प्रस्तुतीकरण देखा, और फिर शाम को उन्होंने राष्ट्रीय खेलों का उद्घाटन किया।

इस भव्य उद्घाटन समारोह में मशहूर गायक जुबीन नौटियाल, पवनदीप राजन और पांडवाज ग्रुप ने अपनी शानदार प्रस्तुतियों से कार्यक्रम को यादगार बना दिया। इसके अलावा, चार हजार से अधिक कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने आयोजन को और रंगीन और जीवंत बना दिया। साथ ही, पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति जागरूकता भी दिखाई गई, और उद्घाटन समारोह में हरित पटाखों का प्रयोग किया गया, जिससे पर्यावरण पर नकारात्मक असर कम से कम हो सके। इस प्रकार, यह आयोजन न केवल खेलों की प्रतिस्पर्धा का केंद्र बना, बल्कि उत्तराखंड की सांस्कृतिक धरोहर को भी प्रस्तुत करने का बेहतरीन अवसर साबित हुआ।

राष्ट्रीय खेलों के बाद, इन खेलों ने उत्तराखंड में खेलों के प्रति नई ऊर्जा और उत्साह का संचार किया। यह आयोजन राज्य के खिलाड़ियों के लिए एक अद्भुत अवसर था, जिससे वे राष्ट्रीय स्तर पर अपनी क्षमता का प्रदर्शन कर सके। इन खेलों के माध्यम से राज्य ने अपनी खेल संस्कृति को प्रमोट किया और भविष्य में यहां होने वाले खेल आयोजनों के लिए एक मजबूत नींव रखी। 38वें राष्ट्रीय खेलों का आयोजन न केवल उत्तराखंड के लिए, बल्कि देश भर के खेल प्रेमियों और खिलाड़ियों के लिए एक ऐतिहासिक पल था।

38वें राष्ट्रीय खेलों में उत्तराखंड ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 25वें स्थान से सीधे सातवें स्थान पर छलांग लगाई है। घरेलू मैदानों पर खिलाड़ियों ने सफलता की ऊंची छलांग लगाई और सरकार की थीम संकल्प से शिखर तक को साकार कर दिया। 22 स्वर्ण समेत कुल 97 पदक जीतकर उत्तराखंड ने इतिहास रचा और पदक तालिका में सातवां स्थान हासिल किया।

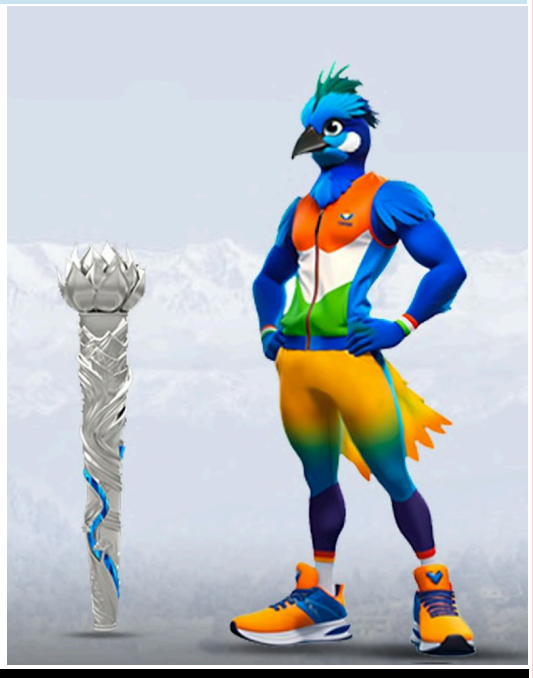

शैलबाला पण्ड्या मैनेजिंग ट्रस्टी, वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, (टी.एम.डी.) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शांतिकुंज, हरिद्वार, 249411 (उत्तराखंड) द्वारा प्रकाशित तथा सेंचुरी आफसेट प्रिंटर्स, गुप्ता कांप्लेक्स, रेलवे रोड, ऋषिकेश में मुद्रित, संपादक : डॉ. प्रणव पण्ड्या।
पता: शांतिकुंज, हरिद्वार (उत्तराखंड)। पिन-249411 टेली : फैक्स 01334-260723 Email: journalism.masscom@dsvv.ac.in, Website: www.dsvv.ac.in